द्वितीय अध्याय

संजीव की कहानियाँ : वस्तुपरक विवेचन

द्वितीय अध्याय

''संजीव की कहानियाँ : वस्तुपरक विवेचन''

प्रस्तावना -

कहानी का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रधान तत्त्व कथावस्तु है। कथावस्तु को समानार्थी कथा, विषयवस्तु तथा कथानक आदि कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे प्लॉट तथा थीम कहते हैं। कथावस्तु का विषयक्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है। कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव की उपज होती है। वह अपने अनुभवों को कल्पना के संयोग से एक सर्वथा नवीन स्वरूप प्रदान करता है।

प्राचीन काल की कहानियों में असंभव बातें, कल्पित घटनाएँ, पौराणिक, जासूसी आदि बातें वर्णित की जाती थी। लेकिन अब कहानी में परिवर्तन हो गया है। मानव के बौद्धिक विकास के कारण समाज में चल रही घटनाओं को देखकर उसमें यथार्थता को स्पष्ट करने की ताक़त कहानी में आ गई है। कहानी में अब समाज का वास्तविक चित्रण होने लगा है। समाज को सिर्फ मनोरंजन देनेवाला साहित्य अब मजदूर, नारी, दलित तथा निम्न वर्ग आदि लोगों की समस्याओं क विवेचन करने लगा है। साथ ही उसमें ग्रामीण समाज में स्थित ग्राम-जीवन, उनका शोषण, अंधविश्वास तथा अशिक्षा आदि का चित्रण पर्याप्त मात्रा में होने लगा है।

आधुनिक हिंदी कहानियों में सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जा रहा है। कुछ लेखकों ने आर्थिक समस्याओं को प्रधानता दी है। किसी ने धार्मिक पाखंड को आधारभूत तत्त्व बनाया। आधुनिक कहानी अपने अविर्भाव काल से ही सोद्देश्यपूर्ण रही है। कहानीकारों ने प्रायः सदैव ही क्षेत्रीय परिस्थितियों में यथार्थपरक चित्रण के साथ उसकी एक आदर्शवादी परिणती प्रस्तुत की है। हिंदी कहानीकारों ने कहानियों को एक अलग नजरिया दिया है। उन्होने कहानी के माध्यम से समाज में स्थित रूढ़ि, परंपरा, विविध समस्याएँ, शोषण एवं दलित जीवन की पहचान समाज के सामने प्रस्तुत की। राय कृष्णदास जी कथावस्तु के बारे में लिखते हैं- ''अख्यायिका चाहे किसी लक्ष्य को सामने रखकर लिखी गई हो वा लक्ष्यविहीन हो मनोरंजन के साथ-साथ अवश्य किसी-न-

किसी सत्य का उद्घाटन करती है।"[1] इससे स्पष्ट है कि कहानी मनोरंजन के साथ-साथ सत्य को भी प्रस्तुत करती है। दलित तथा अछूत वर्ग की कहानियाँ समाज द्वारा होते शोषण को प्रस्तुत करती हैं।

आधुनिक साहित्यकारों ने दलित-जीवन से संबंधित अनेक उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी हैं। इनमें प्रेमचंद, रांगेय राघव, मदन दीक्षित, जयप्रकाश कर्दम, रामधारी सिंह 'दिनकर' ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि लेखकों ने दलित जीवन पर प्रकाश डाला है। दलितों की कथा-व्यथा, उनका आक्रोश, आत्मक्रंदन तथा सदियों से ढोते जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करके दलित तथा निम्न वर्ग को सजग किया तथा इस गुँगे समाज को वाणी दी।

'संजीव' दलित साहित्यकारों में एक प्रभावशाली कथाकार के रूप में चर्चित है। अछूते क्षेत्र को उन्होंने अपनी कहानियों में स्थान दिया। अपने धारदार कथ्य, अभिनव शिल्प और भाषा सौष्ठव से अपनी पुरी पीढ़ी को प्रभावित किया है। संजीव ने दलित जीवन को करीब से देखा, अनुभव किया तथा उसे समाज के सामने उजागर भी किया। संजीव की कहानियों में दलितों का जीवन, उनकी समस्याएँ, शिक्षा-दीक्षा, आर्थिक स्थिति, शोषण तथा दलित विद्रोह आदि बातें दिखाई देती हैं। उनकी कहानियाँ नारी को समाज में क्या स्थान है ? यह भी दर्शाती हैं। साथ-ही-साथ सपेरे, मास्टर, मिल मजदूर आदि की समस्याओं को भी उन्होंने न्याय दिया है। इनकी कहानियों का वस्तुपरक विवेचन करने से पहले हम कथावस्तु का महत्त्व देखना आवश्यक समझते हैं -

2.1 कहानियों में कथावस्तु का महत्त्व -

कहानी का प्राणतत्त्व 'कथावस्तु' होती है। कहानी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन कथानक ही है, क्योंकि कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव की उपज होती है। कथा के बिना कहानी पूरी ही नहीं होती। जैसे- 'जल बिन मछली' उसी तरह 'कथा बिन कहानी' है। फलतः कहानी में कथावस्तु का महत्त्व अनन्य साधारण है तथा कहानी का मूलाधार कथावस्तु ही है।

---

1. राय कृष्णदास - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ - 17

कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त होती है। इसमें यथार्थता और विश्वसनीयता प्राप्त होती है। कहानी आरंभ से लेकर अंत तक पाठक के हृदय में कौतुहल तथा उत्सुकता लाती है। रोचकता तथा क्रमबद्धता के कारण कहानी की कथावस्तु प्रवाहशील रहती है। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार- कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्र को इतने माधुर्य से परिपुरित कर देता है, जितना रातभर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता।"[1] इससे स्पष्ट है कि प्रेमचंद्र जी ने कहानी को संगीत की उपमा देकर संक्षिप्त रूप में परिभाषित किया है। कहानी में पात्रों की संख्या कम रहती है। एक ही बैठक में पढ़ी जा सकती है। कहानी में कथोपकथन संक्षिप्त होता है, भाषाशैली, देशकाल वातावरण तथा संवाद भी रोचक रहते हैं।

कथावस्तु के लिए अन्य सभी तत्त्व सहायक एवं पूरक रहते हैं। कथावस्तु में निबद्ध घटनाओं को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए वह विविध सूत्र जुटाते हैं और कहानी को स्वरूपगत परिपूर्णता प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से कहानी की कथावस्तु विविध घटनात्मक विवरणों के आधार पर निर्मित होती है। कथावस्तु संक्षिप्त, रोचक, मौलिक, क्रमबद्ध और विश्वसनीय होनी आवश्यक है। उसमें उत्सुकता, शिल्पगत नवीनता, प्रभावात्मक एकता आदि गुण आवश्यक हैं। डॉ. प्रतापनारायण कहानी की कथावस्तु के बारे में कहते हैं- "सामान्य साहित्य के भाँति ही कहानी की कथावस्तु का विषय क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक है। कहानी का प्राणतत्त्व कथावस्तु होने के कारण वह मानव जीवन और मानव स्वभाव के भाँति ही प्रशस्त क्षेत्रवाली होती है। कहानी की कथावस्तु में निबद्ध घटनाएँ और कार्य व्यापार कहानी की गतिशीलता में वृद्धि करते हैं।"[2] इससे स्पष्ट है कि कहानी मानव जीवन और स्वभाव की तरह बड़े क्षेत्रवाली होती है। कहानी की शुरूआत में पात्रों के परिचय किसी-न-किसी रूप में प्राप्त होते हैं। कहानी का उद्देश्य भी स्पष्ट रहता है। कहानी के मध्य में समस्या का परम विस्तार तथा अंतर्द्वंद्व का आरोह अवरोह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है। रचना विधान की दृष्टि से कथावस्तु का मध्यभाग ही कहानी का विकास भाग है और

---

1. मुंशी प्रेमचंद - कुछ विचार, पृष्ठ - 27
2. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ - 258

कौतुहल इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहानी के अंत में कौतुहल तथा कहानी का संपूर्ण अभिप्राय स्पष्ट होता है। यहाँ कहानी का कार्य पूरा होता है। अतः स्पष्ट है कि कहानी में कथावस्तु का महत्त्व कितना अनन्य साधारण है।

2.2 विवेच्य कहानियों का वस्तुपरक विवेचन -

संजीव आधुनिक युग के दलित साहित्यकारों में से एक हैं। उनके उपन्यास एवं कहानी संग्रहों द्वारा दलित एवं निम्न वर्ग की विविध समस्याएँ समाज के सामने प्रस्तुत हुई हैं। उनकी अधिकतर कहानियाँ आत्मकथात्मक हैं। इन कहानियों के माध्यम से उनके जीवन की घटनाएँ, अनुभव, विचार एवं भावनाएँ स्पष्ट हुई हैं। उनमें समाज में व्याप्त परंपरागत रूढ़ि, जातिभेद, छुआछूत, शोषित, दलित पीड़ित व्यक्ति द्वारा भोगे हुए अनुभवों का कथन है।

संजीव के कुल ग्यारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इन कहानी संग्रहों में से कुछ कहानियाँ लंबी हैं। यहाँ पर निम्नलिखित पाँच कहानी संग्रहों का वस्तुपरक विवेचन प्रस्तुत है। 'तीस साल का सफरनामा', 'आप यहाँ हैं', 'भूमिका तथा अन्य कहानियाँ', 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' तथा 'प्रेतमुक्ति' इन कहानी संग्रहों में कुल पैंतालीस कहानियाँ हैं। इनमें मिल मजदूर, मास्टर, सपेरे, हरिजन, सवर्ण दलित, बेरोजगार युवक, आदिवासी, नारी, हलवाहों, चरवाहों आदि का चित्रण प्राप्त हुआ है।

2.2.1 तीस साल का सफरनामा -

दिशा प्रकाशन, दिल्ली से सन् 1981 में प्रकाशित 'तीस साल का सफरनामा' कहानी संग्रह में कुल नौ कहानियाँ हैं। इन कहानियों की विशेषता यह है कि इसमें विविध समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

'अपराध' कहानी में जेल में स्थित अपराधों पर प्रकाश डाला है। 'मरोड़' में मास्टरजी के जीवन में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है। 'टीस' में सपेरे शिबूकाका के जीवन में स्थित दर्द को स्पष्ट किया है। 'भूखे रीछ' में मिल मजदूरों की जीवनगाथा है। 'चाकरी' में सवर्ण दलित की व्यथा दिखाई देती है। 'बाग़ी' में मानपत्र लेखक की दमनीय बगावत को स्पष्ट किया है। 'प्रतिद्वंद्वी' में अस्तित्व की टकराहट को उजागर किया है। 'किस्सा एक बीमा कंपनी

एजंसी का' में बीमा एजंट की व्यथा दिखाई देती है। 'तीस साल का सफरनामा' में दलित सुरजा का शोषण प्रस्तुत हुआ है।

2.2.1.1 'अपराध' -

'तीस साल का सफरनामा' कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'अपराध' में कहानी का नायक सिद्धार्थ 'अपराध' विषय पर शोधकार्य कर रहा है। शोध के दरमियान सिद्धार्थ पुलिस स्टेशन, जेल आदि जगह जाकर कैदियों से मिलता है। पुलिस, जेलर आदि से मिलकर अपराध के बारे में जानकारी हासिल करता है। सिद्धार्थ का दोस्त शचिन और उसकी बहन संघमित्रा नक्सलवादी हैं। इनके पिता अपने बच्चों को बेगुनाह साबित करने के लिए बहुत प्रयास करते हैं, परंतु मरते दम तक इनकी इच्छा अधूरी रहती है। जेल में सिद्धार्थ शचिन की मुलाकात लेता है, तब शचिन कहता है- ''तुम्हारी नीयत अपराध मिटाने की नहीं उस पर फलने-फूलने की है।''[1] शचिन यह भी बताता है कि संघमित्रा पर पुलिस ने बड़ी बेदर्दी से शारीरिक अत्याचार कर उसे जान से मार डाला है। तब सिद्धार्थ को अपना शोधकार्य गलत लगता है। सिद्धार्थ अपनी शोध की फाइल गंगा में बहा देता है।

इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि समाज में स्थित जो अपराध चलते हैं उस पर निवृत्ती के उपायों पर शोध करना कितना कठीन है। पुलिस समाज की रक्षा करने की बजाय समाज का शोषण करती है। कैदियों के साथ बुरा बर्ताव करती है, महिलाओं का लैंगिक शोषण करती हैं। अतः इन अपराधों को देखकर कहानी का शीर्षक भी यथार्थ लगता है।

2.2.1.2 'मरोड़' -

'मरोड़' इस दूवितीय कहानी के नायक मास्टर दिनानाथ ज्युनिअर सेक्शन को पढ़ाते हैं। परिवार का आर्थिक बोझ बढ़ जाने से वे ट्यूशन लेते हैं। अनपढ़ बीवी, वृद्ध माता-पिता तथा बड़ी लड़की मानसिक रूप से विकृत हैं। पिता की मृत्यु तथा बीवी भी रक्ताल्पता के कारण हमेशा बीमार रहती है। मास्टर जी दूसरों के बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते अपने बच्चों की तरफ कम

---

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 28

ध्यान देते हैं। सेठ चंदानिया मास्टर जी को सव्वा सौ रुपए देकर सुबह के वक्त अपने बच्चे के लिए ट्युशन लगवाते हैं। मास्टर जी सुबह ट्यूशन लेते हैं। दिनभर स्कूल, कभी सेठ तो कभी साहब लोग फरमान देकर, धमकियाँ देकर, प्रलोभन देकर सेठ लोग मास्टर जी का समय अपने नाम करा लेते हैं। मास्टर जी के दोनों बेटे मैट्रिक की परीक्षा देते हैं। परीक्षाफल आने पर सेठ का बेटा प्रथम श्रेणी पाता है और मास्टर जी के बेटे तृतीय श्रेणी में पास होते हैं। मास्टर जी के बेटे मास्टर बनेंगे और सेठ का बेटा सेठ बनेगा यह सोचकर मास्टर जी को अपने पिताजी की कही हुई बात याद आती है- ''जिंदगी एक रिले रेस है। पहले बाप दौड़ शुरू करता है। कतरे-कतरे चू चू कर रीते हो जाते हैं दिन, लीक में ही समा जाता है वजूद। बाप दे जाता है रिले की बैटम (छड़ी) अपनी संतानों को। संतानें वहाँ से शुरू करती हैं अपने हिस्से की रेस।''[1]

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने मास्टर जी के जीवन को स्पष्ट किया है। अपने परिवार का आर्थिक बोझ ऊठाने के लिए यहाँ से वहाँ मारे-मारे फिरकर ट्यूशन लेना, स्कूल में पढ़ाना और जो पैसे कमाते वह भी दवा-दारू तथा डॉक्टर की फीस में चले जाना। अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा प्राप्त हो इसके लिए यत्न करते हैं, परंतु आर्थिक स्थिति से कमजोर मास्टरजी असफल रहता है।

2.2.1.3 'टीस' -

तृतीय कहानी 'टीस' में काकड़डिहा कोलियरी के मालिक बस्ती के पास सुविधा तथा मुनाफे को देखते हुए वहाँ खुली खदान शुरू करते हैं, जिसमें बस्ती के लोगों की खेती चली जाती है। कथानायक शिबू काका का खेत भी खदान में चला जाता है। खेती के जो पैसे प्राप्त होते हैं वह नशापान में उड़ा देते हैं और चासा से सपेरे बनते हैं। अपनी पत्नी मताई के साथ सपेरों का खेल दिखाकर तथा साँप बेचकर अपना जीवन गुजारते हैं। शिबू काका की पहचान वेलफेयर अफसर के पुत्र से होती है, जिसे वह भाइपा कहते हैं। भाइपा को दो बार साँप ने डसा था और दोनों ही बार शिबू काका जड़ी-बूटियों द्वारा उसे ठिक करते हैं। इसके कारण दोनों में दोस्ती हो जाती है शिबू काका गाँव के उच्च वर्ग के लोगों से घृणा करते हैं। उन्हें साँपों के अलग-अलग नाम

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 13

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

देता है। पुजारी पंचानन भट्टाचार्य औरतों को घूरता रहता है इसीलिए उसे भी गोखुर छापवाला नाग कहते हैं।

एक दिन शिबू काका किंग कोबरा साँप पकड़कर उसे बेचने के लिए कलकत्ता चले जाते हैं, घर आते-आते अंधेरा होता है। घर में मताई को पुजारी पंचानन भट्टाचार्य के पास सोई देखकर गुस्से से मताई को जान से मार देते हैं। पुजारी अंधेरे का फायदा उठाकर भाग जाता है। शिबू काका को आजीवन कारावास की सजा मिलती है। भाइपो डि. एस्. पी. है इसीलिए उनसे वे कहते हैं- ''हमको तो जेल दे दिया, ठीक किया, मगर आप हमारा माफिक उसको जेल देने सकेगा न ?''[1] शिबू काका पुजारी को सजा दिलवाना चाहते हैं। भाइपो बहुत सारी कोशिश करने पर भी सामाजिक, राजनीतिक दबाव आदि से पुजारी कानून के हर फंदे से बचता है। शिबू काका को एक ही दुःख है पुजारी को सजा देना। एक दिन रात को जेल की दीवार फाँदते वक्त शिबू काका हाथ-पाँव तुड़वा बैठते हैं साथ-ही-साथ मानसिक संतुलन भी गँवा बैठते हैं। शिबू काका की इच्छा पुजारी को सजा मिले लेकिन इसी दर्द में वह टीस-टीस कर मरते हैं।

इस कहानी में लेखक ने शिबू काका का दर्द स्पष्ट किया है। मनुष्य को कोई एक दुःख सलता है, तो वह उसी दुःखी-दर्द में टीस-टीस कर अपनी जान देता है। शिबू काका की यही 'टीस' सार्थकता से अंकित की है।

2.2.1.4 'भूखे रीछ' -

मिल्टन साहब एक लड़की पर जबरदस्ती कर रहे हैं, यह जानकर रामलाल, बिहारी तथा मास्टर और उनके सहयोगी मिल्टन साहब को बहुत पीटते हैं। लड़की लानेवाले दलाल को पाँच जगह दागते हैं। लड़की माँ-बाप के घर जाने से इन्कार करती है, तब मास्टरजी रामलाल कुँवारा है इसलिए लड़की को उसके हवाले करते हैं। सात दिनों के बाद लड़की का नाम रजिया है यह पता चलता है। रामलाल ने मुस्लिम लड़की से शादी की इसीलिए बिरादरी तथा परिवार से संबंध टूटता है। रामलाल को एक बेटी तथा बेटा है। बेटी मिल्टन की तरह दिखती है, इसलिए हर वक्त रजिया को ताने देता रहता है। बेटी की शादी करने के लिए रामलाल को पाँच हजार रुपयों की

---

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 53

जरूरत है। आर्थिक स्थिति से दयनीय रामलाल को ओव्हर टाइम मिलने पर उसकी आर्थिक समस्या हल हो सकती है।

कारखाने में पक्षपात करके मजदूरों को काम करने नहीं देते। सारे मजदूर मोर्चाबंदी करते हैं, जुलूस निकलवाते हैं। रामलाल प्रमोशन तथा ओव्हर टाइम मिल जाए इसीलिए अपने मजदूर भाइयों का साथ नहीं देता। बिहारी मिल मालिक की चापलूसी करता है। रामलाल बिहारी को बताता है कि वह न तो आंदोलन में है, न जुलूस में और न तो हड़ताल में। इसीलिए वह उसके प्रमोशन के लिए साहब से बात करें। बिहारी रामलाल को नाहक चिंता न करने की बात करता है। बिहारी कहता है- "वे साले भी कैसे घामड़ हैं ! मिल्टनवाँ की बेटी को तेरी बेटी समझते हैं ! .....तेरे लिए काफी सुनहरा मौका है। अरे, इसमें सोचना-विचारना क्या ! इस पोसी हुई बछिया की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने में क्या हर्ज है ?"[1] रामलाल बिहारी की बात सुनकर उसे बहुत मारता-पीटता है। बिहारी को गर्म रॉड से पाँच जगह दागकर ही रामलाल दम लेता है। रामलाल मजदूरों का साथ देने के लिए अपने परिवार समेत जुलूस में शामिल होता है। जो रामलाल अपनी गलती सुधारता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है।

लेखक इस कहानी के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि हमें भूखे रीछों की तरह नहीं रहना चाहिए, जो अपने ही साथी को मार कर खा जाए। हमें अपने लक्ष्य की ओर ध्यान देकर अपना लक्ष्य साध्य करना चाहिए।

2.2.1.5 'चाकरी' -

'चाकरी' कहानी का नायक 'मैं' बचपन से ही बदतर जिंदगी जी रहा है। गाँव के जमींदार 'मैं' के परिवार की जमीन हड़पते हैं। 'मैं' का परिवार सवर्ण होते हुए भी हलवाही करता है, इसीलिए उन्हें जात-बिरादरी से बहिष्कृत करते हैं। 'मैं' का परिवार बर्तन मांजना, टेबूल साफ करना आदि जो काम-धंधा मिले उससे अपना गुजारा करते हैं। 'मैं' भी बूट पॉलिश करना, अखबार बेचना, कार पोंछना आदि काम करते-करते बी.एस्. सी. प्रथम श्रेणी में पास होता है। नौकरी के अभाव में वह ट्युशन लेता है। 'मैं' बोस साहब की बेटी को पढ़ाता है, उसे नोट्स

---

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 68

निकालकर देता है और इम्तहान के पर्चे भी हल करता है। बोस साहब की बेटी अपने पिता की बदौलत अफसर बनती है और 'मैं' को अपने अफसर शिष्या की चाकरी में एक अदना क्लर्क बनना पड़ता है।

लेखक ने यहाँ पर सवर्ण की व्यथा को स्पष्ट किया है, जो होशियार होकर भी अच्छी नौकरी नहीं प्राप्त कर सकता। पूँजीपति अपने धन के बल पर अपनी संतानों को नौकरी दिलाते हैं तो दलितों को चाकरी करना तथा पूँजीपतियों की आज्ञा को मानना पड़ता है।

2.2.1.6 'बाग़ी' -

'बाग़ी' का नायक मानपत्र लिखनेवाला लेखक हमेशा बगावत की बातें करता है। उसका बचपन में शिक्षक द्वारा शोषण होता है। उच्च वर्ग के लड़के भी उस पर धौंस जमाते हैं। वह हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर भी उसे शिक्षक पिछले बेंच पर बिठाते हैं। लेखक मंत्री महोदय उद्घाटन समारोह पर आने पर उनके अभिनंदन समारोह के लिए सुंदर-सा मानपत्र लिखकर देता है। मानपत्र लिखनेवाला लेखक मंत्री महोदय को शिकायती खत भेजता रहता है, लेकिन मंत्री एक भी शिकायत की समस्या को हल नहीं करता। मानपत्र लेखक गुस्से से एक असली और एक नकली मानपत्र लिखने की सोचता है और लिखता भी है। मंत्री जी प्लांट का उद्घाटन स्वयं न कर एक आम आदमी के हाथों करवाना चाहते हैं। आम आदमी में मानपत्र लेखक का नाम चुनते हैं। मानपत्र लेखक ने असली मानपत्र में पर्सनल मैनेजर की काली करतूतों का पर्दाफाश किया था। वही लेखक को उद्घाटन के लिए आमंत्रित करने आता है। मानपत्र लेखक मान-सम्मान का लालच पाकर बगावत करना भूल जाता है। असली और नकली मानपत्र लिखकर जो बगावत करता है उसे छोड़कर वह कुत्ते की तरह दूम हिलाते पर्सनल मैनेजर की गाड़ी में जा बैठता है। मानपत्र लेखक अपना स्वाभिमान एवं अहं को त्यागकर आम आदमी से खास आदमी बनने के लिए जाता है। मानपत्र लेखक कहता है- ''ले-देकर सवाल 'आम' और 'खास' के बीच त्रिशंकू-सा अटक रहा था। इसी 'खास' बनने के लिए आम अदमी जनम-जनम जतन करता है, पेतरे बदलता है, धक्कमधक्का करता है, लंगियाँ चलाता है और फिर भी खास बनने से रह जाता है और उसके सारे सपने और उसकी सारी संभावनाएँ इन लटकों में अटकी रह जाती हैं और यहाँ हाल यह है कि

नदी खुद प्यासे के पास आकर पानी पूछ रही है।''[1] अतः स्पष्ट है मान सम्मान के लिए मनुष्य अपना स्वाभिमान भी त्याग देता है।

लेखक ने 'बागी' के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि प्रसिद्धि पाने के लिए मनुष्य अत्याचार, अन्याय करनेवालों के भी तलवे चाटता है। मानपत्र लेखक मंत्री, पर्सनल मैनेजर के खिलाफ बगावत करता है, परंतु मान-सम्मान के लालच हेतु वह अपना आत्मसम्मान भुलता है।

2.2.1.7 'प्रतिद्वंद्वी' -

'प्रतिद्वंद्वी' कहानी का नायक मुन्ना एक प्रतिद्वंद्वी मास्टर है, जो मुन्ना के परिवार में शामिल हुआ है। मास्टर मुन्ना के परिवार की समस्याएँ हल करके अपना रौब जमाता है। मुन्ना की बहन अनीता अपाहीज है इसलिए उसे सारे लोग लंगड़ी-लंगड़ी कहकर चिढ़ाते हैं। मास्टर सारे लोगों को डाँटता है और अनीता में पूरा आत्मविश्वास जगाता है। मुन्ना मास्टर को हर तरफ से मात देना चाहता है परंतु कोई भी मौका प्राप्त नहीं होता। एक स्कूल में शिक्षक के रिक्त पद के लिए दोनों भी आवेदन देते हैं। अनीता गर्ल्स स्कूल की प्रदर्शनी में हिस्सा लेती है। मुन्ना तथा मास्टर दोनों भी प्रदर्शनी देखने जाते हैं। प्रदर्शनी में आकर्षक छात्राओं द्वारा चीजें खरीदने के लिए लोग वहाँ पर आते हैं। अनीता भी अपने हाथों से निकाले हुए बेल बुट्टे की साड़ी को दिखाते हुए एक-एक पीस लेने के लिए आग्रह करती है। सारे आमंत्रित लोगों की कामूक नजरें अनीता की ओर देखकर मास्टर को यह लड़कियों की नुमाइश अच्छी नहीं लगती। मास्टर सारे लोगों को डाँटकर अनीता को घसीटते हुए घर ले जाता है। दूसरे दिन स्कूल में साक्षात्कार के दरमियान प्रदर्शनी में जो हंगामा हुआ वह सही है या गलत इसके बारे में मुन्ना से पूछते हैं। मुन्ना मास्टर का आक्रोश व्यर्थ है यह स्पष्ट करते हुए अनीता उसकी बहन है यह भी बताता है। मास्टर से यह सवाल पूछने पर वह कल जो हंगामा हुआ उसके लिए माफी मांगता है और अपने लिए नौकरी हासिल करता है।

इस कहानी में मुन्ना तथा मास्टर अपने अस्तित्व की टकराहट के लिए जुझते दिखाई देते हैं। नौकरी पाने के लिए यह दोनों प्रदर्शनी में लड़कियों की चलती नुमाईश को नजर

---

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 85

अंदाज करते हैं। मास्टर प्रदर्शनी में आमंत्रित लोगों को डाँटकर वहाँ अपना रूतबा बढ़ाता है। लेकिन नौकरी के लिए वह अपना स्वाभिमान छोड़ता दिखाई देता है

2.2.1.8 'किस्सा एक बीमा-कंपनी एजेंसी का' -

इस कहानी का नायक बेरोजगार है। अपने दोस्त फिल्ड ऑफिसर के कहने पर वह इंश्योरेन्स कंपनी का एजंट बनता है। इंश्योरेन्स एजंट बनने पर चारों तरफ एजंट ही एजंट दिखाई देते हैं। लोग भी इंश्योरेन्स एजंट को देखकर भागते रहते हैं। इंश्योरेन्स एजंट लोग बीमा उतारे इसीलिए उन्हें हर तरह से रिझाता रहता है। एक बार इंश्योरेन्स एजंट की मुलाकात अपने दोस्त से होती है। दोनों भी एक-दूसरे को सुखी-संपन्न समझकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। वह दोस्त इंश्योरेन्स एजंट को होटल ले जाता है। होटल में अच्छी-अच्छी खाने की चीजें मँगवाता है। बातों-बातों में दोनों भी एक-दूसरे को बचत करने की सलाह देते हैं। भविष्य में सचेत रहने के लिए तथा बेफिजूल पैसे खर्च न करने की सलाह भी देते हैं। अतः दोनों को भी यह पता चलता है कि दोनों भी इंश्योरेन्स एजंट हैं। इंश्योरेन्स एजंट का दोस्त बीमा उतारने के लिए जो बड़ी-बड़ी बातें करता है वही एजंट को सजा के तौर पर होटल बिल भरने के लिए कहता है। इंश्योरेन्स एजंट प्रीमियम के पैसे से होटल का बिल भरकर चला जाता है।

इस कहानी में लेखक ने बेरोजगार युवक जो भी काम मिले उसे स्वीकार करते हैं। इंश्योरेन्स एजंट बनने पर किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण संजीव जी ने किया है।

2.2.1.9 'तीस साल का सफरनामा' -

इस कहानी में 'सुरजा' एक गरीब किसान है। कानून एवं उच्च वर्ग के शोषण से वह मजदूर बन गया है। सड़क बनने के कारण सुरजा की खेती उसी में चली जाती है। शेष जमीन, पेड़ आदि नंबरदार हड़पता है। भूमिहीनों को जब भूमि दी जाती है, तब उच्च वर्ग खुद भूमिहीन बनकर जमीन हड़पता है। सुरजा नंबरदार के यहाँ गड़ही की रोपनी संपन्न होने पर वहाँ जो खीर मिलती है, वह खीर अपने बेटे के लिए छूपाकर ले जाता है। तभी नंबरदार का बेटा राघवेंद्र सुरजा पर खीर चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर पीटता है। सुरजा इस अन्याय के खिलाफ विद्रोह करता है

और गाँववाले भी सुरजा का साथ देते हैं। गाँव में हिंसाचार फैलता है, पुलिस भी सुरजा को नक्सलवादी कहकर जेल भेजती है। जेल में सुरजा को बहुत मारते-पीटते हैं जिसके कारण सुरजा को मिरगी के दौरे आने लगते हैं। नंबरदार सुरजा को जेल से छुड़ाकर लाता है और एक बाग़ी की सेवा में लगा देता है। गाँव में फिर से उच्च वर्ग की हुकूमत शुरू होती है।

इस कहानी में लेखक ने भारत स्वतंत्र होकर तीस साल गुजरने पर भी देहातों में दलितों का शोषण किस प्रकार होता है इसका चित्रण किया है। पुलिस भी उच्च वर्ग के कहने पर झूठे इल्जाम लगाकर दलितों का शोषण करती है। साथ ही सामंतवादी तथा पूँजीपतियों की हुकूमत यहाँ पर स्पष्ट हुई है।

2.2.2 'आप यहाँ हैं' -

अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली से सन् 1984 में प्रकाशित 'आप यहाँ हैं' कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ हैं। इस कहानी संग्रह की विशेषता यह है कि इसमें अधिकतर मिल मजदूर, आदिवासी, नारी तथा सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है। 'जसी बहू' कहानी में नारी शोषण को चित्रित किया है। 'धनुष टंकार' में मिल मजदूरों की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। 'कठपुतली' में कल्याणी का जीवन भी कठपुतली की तरह नजर आता है। 'लोड शेडिंग' में बिजली कटौती के कारण समाज में उत्पन्न समस्याओं का चित्रण प्राप्त होता है। 'पुन्नी माटी' कहानी में नौकरी करनेवाली युवती की समस्या नजर आती है। 'आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासियों का जीवन स्पष्ट हुआ है। 'ट्रैफिक जाम' में ट्रैफिक जाम होने पर सामाजिक जन-जीवन पर क्या असर पड़ता है इसे दिखलाया है। 'धावक' में दो भाईयों के आचार-विचार में मतांतर है उसे स्पष्ट किया है। 'प्याज के छिलके' में जातीय भेदाभेद तथा सवर्णों का आपसी गठबंधन नजर आता है। 'प्रेतमुक्ति' में दलितों की अंधश्रद्धा तथा जमींदारी प्रथा एवं शोषण को चित्रित किया है। 'धुआँता आदमी' में अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ मन-ही-मन में धुआँता आदमी चित्रित हुआ है।

2.2.2.1 'जसी बहू' -

गाँव के महाजनों से तंग आकर 'जसी बहू' का पति जसी अपनी जवान पत्नी को छोड़कर नौकरी के लिए कलकत्ता भाग जाता है। एक बच्ची होने तक जसी गाँव आता-जाता रहता है। उसके बाद वह अनेक वर्ष गाँव नहीं आता है। जसी की पत्नी 'जसी बहू' साहसी है, वह अकेली खेत का कारोबार सँभालती है। सितई पंडित रात के वक्त घर में घूसने पर जसी बहू उसे जमकर पकड़ती है और चिल्ला-चिल्लाकर सारे गाँव को इकट्ठा करती है। एक रात जसी बहू आम चुराने सितई पंडित के खेत में जाती है, तब सितई पंडित जसी बहू की इज्जत लूटता है। जसी बहू गर्भवती बनने पर सितई पंडित गर्भ गिराने के लिए कहता है। जसी बहू इन्कार करती है और उसी समय जसी भी शहर से वापस आता है। जसी पत्नी को गर्भवती देखकर उसे बहुत पीटता है तथा जान से मारने के लिए दौड़ता है। इन दोनों का कोहराम सुनकर सारे गाँववाले इकट्ठा होते हैं। जसी बहू अपने पति से पहले चदरेज सिंह तथा सितई पंडित से हिसाब-किताब चुकता करने के लिए कहती है। एक ने उनकी जमीन हथियायी है तो दूसरे ने उसकी इज्जत लूटी है। वह कहती है- "मोका मार डार रे, मुदा पहिले चंदरेज सिंह और सितई पंडित से हिसाब-किताब चुकता करि आऊ !"[1] लेकिन जसी अपनी पत्नी की बात सुनता ही नहीं। सितई पंडित और चंदरेज सिंह आकर जसी को गालियाँ देते हैं और जसी बहू को अपनाने के लिए कहते हैं। प्रधान जसी से कहता है- "देख इ लड़िका तौर है..... समझे ? इही में तोरी और गाँव की इज्जत है समझे ?"[2] फिर जसी को अपनी पत्नी को घर ले जाने की बात सितई पंडित कहता है। जसी बड़ो की आज्ञा मानकर जसी बहू को अपनाने के लिए तैयार होता है और हाथ पकड़कर जसी बहू को ले जाने लगता है। लेकिन जसी बहू पति का हाथ झटककर कहती है, जिस पति की सुहागन बनकर मैं बढ़ाइयाँ मारती थी, वह पति उसके लिए मर गया। जसी बहू सिंदूर पोंछकर, चूड़ियाँ भी फोड़ती है, वह विधवा बनकर जीना कबूल करती है। जसी बहू अपने पति जसी को छोड़कर बेटी भूइली के साथ घर छोड़ती है। जसी बहू सतमासे लड़के को जन्म देती है। जसी दूसरी शादी करके सितई पंडित की हलवाही करता है।

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 16
2. वही, पृष्ठ - 16

इस कहानी में लेखक ने अत्याचार से पीड़ित, शोषित जसी बहू का यथार्थ चित्रण किया है। जसी बहू का विद्रोह भी न्यायपूर्ण है। अपने डरपोक पति का साथ छोड़कर आधुनिक नारी का रूप स्पष्ट किया है।

2.2.2.2 'धनुष टंकार' -

'धनुष टंकार' कहानी में मिल मजदूर अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए कंपनी मालिक के प्रति भूख हड़ताल कर आंदोलन जारी रखते हैं। लड़ाई की सफलता के लिए युनियन ऐलान करती है। कौन करेगा भूख हड़ताल ? तो सुरसती तैयार हो जाती है। सुरसती का पति झम्मन कारखाने में लूज शटिंग का धख्खा खाने से आजन्म अपाहिज हुआ है, तब सुरसती को कारखाने में नौकरी दिलाते हैं। मुंशी एक बार सुरसती की इज्जत लूटने की कोशिश करता है, तब उसे कारखाने से निकालते हैं। सुरसती अपने मजदूर भाइयों के अधिकार के लिए अन्य मजदूरों के साथ दस दिन से भूख हड़ताल पर बैठती है। भूख हड़ताल पर बैठे आंदोलकों की ओर कंपनी ध्यान नहीं देती। फिर राज्य के मुख्यमंत्री तथा कंपनी मालिक और केंद्रीय मंत्री अनशन भंग करने हेतु मिठाइयाँ लाते हैं। कंपनी मालिक हार मानकर कामगारों की माँगें पूरी करने का वादा करता है। मंत्री मिल मजदूरों के संघर्ष तथा सफलता का ब्यौरा देते हैं। परंतु मजदूर मेजपर रखी मिठाइयों पर टूट पड़ते हैं। अनशन मजदूरों द्वारा भंग हुआ कहा जाता है। आंदोलन के दौरान निकाले गए दस जुझारू मजदूरों को वापस काम पर लेने की बात होती है। सुरसती नौ मजदूरों को जानती थी, दसवाँ आदमी कौन ? पूछने पर मुंशी का नाम सामने आता है। मुंशी का नाम सामने आते ही सुरसती को 'धनुष टंकार' होता है।

लेखक ने इस कहानी नें अहिंसात्मक सत्याग्रह दिखलाया है। मिल मालिक के खिलाफ विद्रोह करना, भूख हड़ताल करना यह शोषित और शोषक वर्ग का संघर्ष है। मिल मजदूर अपने अधिकारों के लिए समूहभाव से संगठन के बल पर लड़ाई लड़ते हैं। यहाँ वर्ग विद्रोह का चित्रण मिलता है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

2.2.2.3 'कठपुतली' -

'कठपुतली' कहानी में नायिका कल्याणी को उसके पिता सिर्फ दो हजार रुपयों में सेठ के हाथों बेचते हैं। सेठ कल्याणी को अपनी रखैल बनाता है। कल्याणी जहाँ रहती है वहाँ की औरतें उससे बात भी नहीं करतीं तथा उसे एक बुरी औरत के रूप में जानने लगते हैं। मुहल्ले के सारे लोग कल्याणी को घृणित नजर से देखते हैं। कल्याणी को यह बात नहीं जँचती और वह सेठ से लड़-झगड़कर पत्नी का दर्जा मांगती है। सेठ भी कल्याणी को बहुत-मारता-पीटता है। कल्याणी अपने माँ-बाप से मिलने जाती है, तब वे भी उससे रिश्ता-नाता तोड़ते हैं। कल्याणी को फिर से सेठ के हवाले कर माता-पिता मुक्ति पाते हैं। सेठ कल्याणी को आठों प्रहर कैद में रखता है। अतः हारकर कल्याणी की शादी मूर्तिकार शंभूपाल से कराते हैं। शंभूपाल भी सेठ का कर्जा उतारने के लिए कल्याणी से शादी करता है। सेठ कल्याणी से पहले जैसे ही अनैतिक संबंध रखता है। सेठ जाने के बाद पति उस पर शारीरिक एवं मानसिक अत्याचार करता है। कल्याणी इन सब बातों से तंग आकर आत्महत्या करती है।

इस कहानी में लेखक ने नारी के कठपुतली समान जीवन का चित्रण किया है। साथ ही जिसके हाथ में उसके जीवन की डोर होती है वह उसे किस प्रकार नचाता है इसे स्पष्ट किया है। साथ ही समाज में नारी का वजूद या अस्तित्व समाज के लिए कितना गौण है यह दिखाई देता है।

2.2.2.4 'लोड शेडिंग' -

'लोड शेडिंग' कहानी में बिजली कटौती के कारण लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बच्चों को पढ़ाई करने में दिक्कतें आती हैं, औरतों को भी घर में काम करना मुश्किल नजर आता है, गर्मी से लोग परेशान रहते हैं। कॉलोनी में एक सेठ रहने आता है, जो बिजली चली जाने पर जनरेटर लगाता है। जनरेटर का कर्णभेदी शोर, तेल के धुएँ से और पर्यावरण प्रदूषण से लोग परेशान होते हैं। मुहल्ले के लोग सेठ को बिनती करते हैं, लेकिन सेठ अनसुना करता है। एस्. डी. ओ. के पास फरियाद देने पर भी कुछ नहीं होता। 'मैं' और उसके दोस्तों की परीक्षाएँ नजदीक आने से पढ़ाई-लिखाई करने में उन्हें जनरेटर के कारण दिक्कतें आती

हैं। मुहल्ले का लड़का चरणजीत सेठ का जनरेटर तोड़ देता है। सेठ के लठैत चरणजीत को बहुत मारते हैं। मुहल्ले के लोग चुपचाप खड़े रहकर तमाशा देखते हैं, कोई भी चरणजीत को बचाने के लिए आगे नहीं आता। 'मैं' चरणजीत जैसे साहसी युवक को बचाने के लिए आत्मीयता से खड़ा होता है।

लेखक ने यहाँ पर सामान्य जन-जीवन पर प्रकाश डाला है। पूँजीपति सेठ धन के बल पर भौतिक सुख-सुविधा अपनाकर साधारण लोगों को तकलीफें देता है। चरणजीत जैसा युवक अन्याय के खिलाफ आवाज ऊठाने पर सेठ के गुंड़े उसे बेहोश होने तक पीटते हैं। यहाँ पर उच्च वर्ग एवं दलित वर्ग का संघर्ष दिखाई देता है।

2.2.2.5 'पुन्नी माटी' -

'पुन्नी माटी' कहानी में जागीरदार श्रीधर राय की बेटी शिखा 'रिसेप्शनिस्ट' की नौकरी करती है। जागीरदार शिखा की शादी के लिए परेशान है। हर साल की तरह जागीरदार दूर्गा पूजा में व्यस्त है। दूर्गा माँ की प्रतिमा बनाने के लिए वेश्याओं की बस्ती से पुन्नी माटी मांगने परे वेश्याएँ पुन्नी माटी के दस रुपए माँगती है। जागीरदार को गुस्सा आता है, वे वेश्याओं की बस्ती में जाकर मौसी से झगड़ा करते हैं। वे कहते हैं- "नीच ! पतिता ! संसार का नर्क। चंद पैसों के लिए संसार का पाप ढोनेवाली.....।"[1] मौसी इस बात पर जागीरदार को अंदर कमरे में ले जाकर उनकी बेटी शिखा रिसेप्शनिस्ट की आड़ में मालदार पार्टियों को खुश करती है, यह बात बताती है। शिखा अगर यह न करती तो उसकी नौकरी चली जाती। श्रीधर राय अपनी बेटी की असलियत जानने पर बहुत दुःखी होते हैं। श्रीधर राय घर जाकर अपने आंगन की मिट्टी दूर्गा पूजा के लिए देते हैं।

इस कहानी में शादी वक्त पर न होने के कारण शिखा नौकरी करती है। शिखा जैसी नौकरी करनेवाली कई युवतियों को नौकरी बचाने के लिए अपना तन बेचना पड़ता है। समाज में नारी को भोग्या के रूप में देखते हैं यह इस कहानी द्वारा स्पष्ट होता है।

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 57

2.2.2.6 *'आप यहाँ हैं'* -

'आप यहाँ हैं' कहानी में मि. वर्मा रेडियों वार्ता में आदिवासियों के विकास की बड़ी-बड़ी बातें बताते हैं। आदिवासी-बनवासी भाइयों के जीवन स्तर में सुधार करने की बात 'हम यहाँ है' रेडियो वार्ता में बताते हैं। लेकिन मि. वर्मा के घर में काम करनेवाली आदिवासी हिंदिया से गधे जैसा काम करवाते हैं। हिंदिया के छोटे-से बच्चे को चप्पल जूतों की बगल में सोना पड़ता है। एक दिन हिंदिया को काम करते-करते देर हो जाती है। तब मि. वर्मा हिंदिया को जीप में से छोड़ने के बहाने बीच रास्ते उसकी इज्जत लूटते हैं। मि. वर्मा अपनी पत्नी तथा बच्चों की अनुपस्थिति में हिंदिया के साथ बुरा बर्ताव करते रहते हैं। एक बार मिसेज वर्मा हिंदिया और मि. वर्मा को एक साथ देखती है। मिसेस वर्मा हिंदिया का दोष मानकर उसके खिलाफ चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर पुलिस केस दायर करती है। हिंदिया वहाँ से भाग जाती है।

एक बार मि. वर्मा अपने परिवार के साथ शिल्वा गाँव के नजदीक पिकनिक मनाने जाते हैं। वहाँ से हिंदिया का घर करीब जानकर उसके परिवार का हालचाल जानने शिल्वा गाँव जाते हैं। हिंदिया के पिता मि. और मिसेज वर्मा का परिचय पाकर घर के सारे बर्तन, कपड़े फेंकते हैं और पहचान कर ले जाने की बात करते हैं। दूसरी ओर से हिंदिया अपने नेतृत्व में एक बड़ा सा जुलूस लेकर आती है और मि. वर्मा को घेरती है। उन्हें गालियाँ देकर बहुत सारे सवाल करती है। सरकार जो पैसे हमारे विकास के लिए देती है, वे आप लोग खाते हैं और चोरी का झूठा इल्जाम हम पर लगाते हैं आदि बातें कहकर सारे आदिवासी मि. वर्मा के परिवार को मारने दौड़ते हैं, परंतु हिंदिया के पिता उन्हें सही-सलामत बाहर निकालते हैं। मि. वर्मा एक दुकान पर पहुँचकर ही दम लेते हैं। दुकान में रेडियो पर मि. वर्मा की 'आप यहाँ हैं' यह वार्ता प्रसारित हो रही है। वह कहते हैं- ''मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब ये ऊँघते पहाड़ अँगड़ाई लेकर जग उठेंगे।''[1] यह सुनकर मि. वर्मा को शिल्वा गाँव की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

इस कहानी में लेखक ने आदिवासियों का जीवन तथा उनके ऊपर होते अन्याय को स्पष्ट किया है। साथ-ही-साथ आदिवासियों में आयी सजगता को भी दिखाया है।

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 73

2.2.2.7 'ट्रैफिक जाम' -

'ट्रैफिक जाम' कहानी में चोरी की चीनी का ट्रक 'नो ओवरटेकिंग ऑन द ब्रीज' के साइनबोर्ड पर ओवरटेक करते हुए गड्ढ़े में गिरता है। सड़क के चारों ओर चीनी छितरी है। इस हादसे के कारण चारों ओर से ट्रैफिक जाम होता है। इसके कारण सामान्य जन-जीवन बिखरता है। पुलिस अपना स्वार्थ साधती है, चोर अपना काम करते हैं। किसी पूँजीपति लड़की को ट्रैफिक जाम होना बड़ा सुहाना लगता है। अस्पताल की गाड़ी में एक औरत प्रसव होती है। नशा करके एक आदमी विद्रोही भाषण करता है। साथ-ही-साथ इस कहानी में पुलिस शोषण भी दिखाई देता है। इस प्रकार अलग-अलग प्रकार की समस्याएँ 'ट्रैफिक जाम' कहानी के अंतर्गत उजागर हुई हैं।

यहाँ पर भ्रष्टाचारी पूँजीपति व्यक्तिगत सुविधा तथा मुनाफे के लिए सामान्य लोगों को मुसीबत में डालते हैं, जिसका यथार्थ चित्रण हुआ है।

2.2.2.8 'धावक' -

'धावक' कहानी में भंबल दा और अशोक दा दोनों सगे भाई हैं, परंतु दोनों के विचारों में जमीन-आस्मान का फर्क है। अशोक दा दो साल के बड़े हैं, लेकिन वे पारिवारिक जिम्मेदारी से अलिप्त रहते हैं। भंबल दा धावक प्रतियोगिता में हरसाल भाग लेते हैं, लेकिन पुरस्कार की अपेक्षा नहीं रखते। अशोक दा समय का लाभ उठाकर चीफ पर्सनल मैनेंजर तक की पोस्ट प्राप्त करते हैं। अपनी माँ, भाई-बहन को छोड़कर वह बड़े साहब की बेटी से शादी कर घरजमाई बनते हैं और उन्हीं के पैसों पर अमेरिका भी जाकर आते हैं। भंबल दा अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी बड़ी ईमानदारी से निभाते हैं। बहन की शादी करते हैं, माँ की देखभाल करते हैं। वह नौकरी भी बड़ी ईमानदारी से निभाते हैं। अशोक दा शान की जिंदगी जीना चाहते हैं बल्कि भंबल दा शान की नहीं सम्मान की जिंदगी जीना चाहते हैं। भंबल दा मरते वक्त अशोक दा के नाम एक चिट्ठी लिखते हैं, जिसमें वे अपने जीवन के प्रति संतुष्ट है तथा अशोक दा को लिखते हैं- ''जिस जुनून में जीया, उसकी तासीर का एक क्षण भी तुम्हारे तमाम ताम-झाम के सालों से उम्दा है ! हो सके तो चखकर कभी देखना।''[1] भंबल दा जीवन की रेस में अशोक दा के पहले निकल जाते हैं

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 96

वह भी बड़े सम्मान से। उन्हें खुशी भी है कि जीवन के इस दौड़ में उन्होने पारिवारिक जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाकर अपने जीवन की दौड़ पूरी की है।

इस कहानी द्वारा दो व्यक्तियों के स्वभाव दर्शन दिखाई देते हैं। एक स्वार्थी है तो दूसरा अपना कर्तव्य एवं जिम्मेदारी प्रामाणिकता से निभाता हुआ दिखाई देता है। दो भाइयों के आचार-विचार यहाँ पर दृष्टिगोचर हुए हैं।

2.2.2.9 'प्याज के छिलके' -

'प्याज के छिलके' कहानी में हरिजन कैलशिया मुंशीजी के खेत से एक प्याज उखाड़ती है। प्याज उखाड़ने के जुर्म में मुंशीजी कैलशिया को झोंटा पकड़कर मारते हैं। सारे दलित इस अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं और मुंशीजी को माफी माँगने के लिए कहते हैं। मुंशीजी का बेटा प्रदीप इन दलितों की बलवाई देखकर गोली चलाता है, जिसमें कैलशिया तथा लंगड की मौत होती है। मुंशीजी पैसा बटोरकर, राजनीतिक दबाव डालकर मामले को रफा-दफा करते हैं। हरिजन हत्या का लाभ ऊठाकर सत्तासीन दल एवं सत्ता विहीन दल एक-दूसरे की इज्जत उतारते हैं और फिर हरिजन हत्या का विरोध करते हैं। मुंशीजी के बहनोई जगदंबा प्रसाद सत्तासीन दल के सांसद हैं जो हरिजन कैलशिया की माँ को सात्वंना देने जाते हैं। कैलशिया की माँ के हाथों खा-पीकर अपना फोटो खींचवाते हैं। कैलशिया की माँ को पाँच रुपयों की उधर की गड्ड़ी तथा चरखा देकर एवं उसके आँसू पोंछकर चले जाते हैं। मुंशीजी अपना बेटा प्रदीप निर्दोष हुआ इसीलिए हनुमान जी की मन्नत पूरी करने के लिए मंदिर का जीर्णोद्धार करते हैं, जिससे हनुमान मंदिर की महत्ता बढ़ती है। मंदिर में भी बड़े-बड़े नजराने आते हैं। हनुमान की पूजा के लिए तमाम भूमिपति जिले के अधिकारी, राजनीतिक मंत्री आते हैं। यह सारे लोग मुंशीजी के पास प्याज के छिलकों की तरह चिपककर खड़े रहते हैं और जश्न मनाते हैं।

इस कहानी में अछूत शोषण को स्पष्ट किया है। हरिजन हत्या को कोई भी न्याय नहीं देता। मंत्री भी अछूत के यहाँ खा-पीकर अपना सम्मान बढ़ाते हैं। पूँजीपति लोग अपना-अपना स्वार्थ साधकर किनारे रहते हैं। यहाँ पर उच्च वर्ग द्वारा हुआ अछूत शोषण प्रस्तुत कहानी में दिखाई देता है।

2.2.2.10 *'प्रेतमुक्ति'* -

दंड-द्वीप इस जंगली इलाके को कालापानी नाम से जानते हैं। इस इलाके में मुखिया तथा उसका बेटा सुरेंदर की हुकूमत चलती है। यह दोनों बाप-बेटे गाँव के दलित लोगों पर बेतहाशा अत्याचार करते हैं। नदी में बांध बनाकर मुखिया नदी का पानी अपनी खेती-बाड़ी में ले जाता है। जिससे गाँव के लोग पानी के लिए दर-दर भटकते हैं। पानी के अभाव में फसलें भी सुखी हुई हैं। सुरेंदर अस्पताल से मुफ्त की पुष्टीकारक दवाइयाँ ले जाता है और गाँव के लोग डॉक्टर के बदले ओझा के पास जाकर टोना, टोटका करते हैं। मुखिया और सुरेंदर दोनों बाप-बेटे गाँव की बहू-बेटियों को अपनी वासना का शिकार बनाते हैं। मजदूरी करनेवालों को मजूरी भी कम देता है। चलित्तर मुखिया के यहाँ मजदूरी करता है, वह हमेशा मुखिया के खिलाफ विद्रोह करता रहता है। गाँववालों को भी चेतित करता है, परंतु उसकी बात कोई नहीं मानता। चलित्तर नदी का बांध तोड़ता है तथा सुरेंदर बाघ की शिकार के लिए जो पाड़ा बांधता है उसे भी छोड़ता है। चलित्तर का बेटा जगेसर मुखिया के चंगुल से भागकर शहर चला जाता है।

एक बार सुरेंदर बाघ के शिकार के लिए जो पाड़ा बांधता है, उसे छुड़ाते वक्त चलित्तर पकड़ा जाता है। सुरेंदर पाड़े की जगह चलित्तर को बांधता है। चलित्त्तर की हत्या होने पर, चलित्तर की प्रेतात्मा ने जगेसर के शरीर में प्रवेश किया है ऐसा बुधन डॉ. राहुल को बताता है। जगेसर भी चलित्तर जैसा व्यवहार करता रहता है। प्रेतात्मा नदी का बांध काटकर तथा सुरेंदर की हत्या होने पर बुधन डॉ. राहुल को जगेसर की प्रेतमुक्ति हो गई यह खबर देता है।

इस लंबी कहानी में दंडद्वीप गाँव की दयनीय अवस्था, उच्च वर्ग द्वारा दलितों का शोषण तथा दलितों की अंधश्रद्धा को चित्रित किया है।

2.2.2.11 *'धुआँता आदमी'* -

'धुआँता आदमी' कहानी में एक आदमी देश में चलते भ्रष्टाचार के खिलाफ मन-ही-मन में धुआँ रहा है। पूँजीपति लोग सामान्य लोगों का शोषण किस प्रकार करते हैं ? राजनीतिक लोग अपने देश का माल विदेश में सस्ते दाम में बेचते हैं और वही माल देश में तीन गुना, सात गुना बढ़ाकर बेचते हैं। विदेश का मुनाफा और अपने देश का नुकसान कराते हैं और

अपने देश को कर्जदार बनाते हैं। पुलिस भी समाज की रक्षा करने के बजाय उन्हें लूटती है, दलितों का शोषण करती है। आदिवासी लोग नंग-धड़ंग घूमते हैं मात्र हम लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं। मिलों में, दुकानों में ढेर सारे कपड़े पड़े रहते हैं। गरीब दलित कपड़े के अभाव में जाड़े के दिन में अपनी जान गवाता है। धुआँते आदमी को गरीब, शोषित, पीड़ित लोगों के प्रति आक्रोश है। वह देश की व्यवस्था के खिलाफ धुआँ रहा है।

अतः इस कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त उच्च वर्ग द्वारा होनेवाला शोषण, भ्रष्टाचार तथा सरकारी व्यवस्था का खोखलापन प्रस्तुत किया है। इससे सामान्य मनुष्य धुआँ रहा है। इसी धुआँते आदमी को लेखक ने यहाँ अंकित किया है।

2.2.3 'भूमिका और अन्य कहानियाँ' -

पराग प्रकाशन दिल्ली से सन् 1987 में प्रकाशित 'भूमिका और अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह में कुल दस कहानियाँ संकलित हैं। इस कहानी संग्रह की विशेषता यह है कि इसमें समाज में व्याप्त विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम कहानी 'भूमिका' में गुंडों की समाज के प्रति जो भूमिका है उसे अंकित किया है। 'महामारी' कहानी में अंधविश्वास तथा दलित-जीवन पर प्रकाश डाला है। 'लांगसाइट' में एक अंध मार्क्सवादी को स्पष्ट किया है। 'फुटबॉल' में बेरोजगार युवकों की समस्या दिखाई देती है। 'चुतिया बना रहे हो' में राजनीतिक चित्र स्पष्ट हुआ है। 'अंतराल' कहानी में बालविवाह का दुष्परिणाम नजर आता है। 'जब नशा फटता है' में जातीय भेदाभेद तथा धर्म परिवर्तन की समस्या दृष्टिगोचर हुई है। 'नौटंकी' कहानी में छोटे बच्चे पर नौटंकी का क्या प्रभाव पड़ता है उसे स्पष्ट किया है। 'मुर्दगाह' कहानी में 'मैं' मुर्दों के बीच जीवित आदमी की तलाश करता दिखाई देता है। 'सीपियों का खुलना' कहानी में क्रांतिधर्मी प्रेमी-प्रेमिका के विपर्यय की कथा है।

2.2.3.1 'भूमिका' -

'भूमिका' कहानी में एम्. एल्. ए. बनने के बाद सड़क के किनारे की जमीन पर कब्जा करने में कोई रूकावट ना आए। इसीलिए सेठ 'मैं' और उनके साथियों को पैसे देकर सड़क किनारे स्थित बस्ती में आग लगवाकर वह बस्ती उजाड़ देता है। उसी आग में जानी के बच्चों को

बचाते वक्त एक औरत घायल होती है और वह अपनी आँखें भी गँवाती है। उस अंधी औरत का गैरलाभ जानी उठाता है। जानी उस अंधी औरत की इज्जत लूटकर फिर उसे 'मैं' और उसके साथियों को बेचता है। घायल अंधी औरत की स्थिति देखकर 'मैं' और उसके साथी दु:खी होते हैं। उन्हें अपने किए हुए गलत काम पर पछतावा होता है और वे उस औरत से माफी मांगते हैं। तब वह अंधी औरत 'मैं' और उसके साथियों को अपनी ताक़त का कैसे गलत इस्तेमाल किया है यह बताती है। हनुमान ने भी लंका जलाकर जिस प्रकार बेगुनाह लोगों को मारकर अपनी ताक़त का गलत इस्तेमाल किया था, उसी प्रकार आप लोग दूसरों के कहने पर बेकसूर लोगों की हत्या करते हैं। 'मैं' और उनके साथियों को अपने पुराने जख्म के दाग देखकर अपनी गलती का एहसास होता है।

यहाँ लेखक ने गुंड़ों के चिरत्र को प्रस्तुत किया है, जो चंद पैसों के लिए बेगुनाह लोगों की जान लेते हैं। राजनीतिक लोग भी गुंड़ों का नाजायज लाभ उठाते हुए तथा गैर कानूनी काम के लिए गुंड़ों का इस्तेमाल करते हुए दिखाई देते हैं।

2.2.3.2 ***'महामारी'*** -

कथानायक 'मैं' के गाँव में दो-चार संपन्न गृहस्थों को छोड़कर किसी को भी दो वक्त भोजन नहीं मिलता। गाँव के लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है कि बच्चियाँ, बुढ़ियाँ, प्रौढ़ महिलाएँ तेल का खर्चा बचाने के लिए मुंड़न करती हैं। गाँव के लोग अंधश्रद्धालू हैं, गाँव में महामारी फैलने पर दवा-दारू करने के बजाय देवी-पाठ करते हैं। देवी के लिए पचरा गीत गाना, पंडित को बुलाकर पूजा-पाठ करवाना, गाँव के हर एक को चंदन लगवाना तथा आखरी आदमी को चंदन छूने पर पक्की पूजा करना और छोहरी खिलाने का सिलसिला शुरू होता है। 'मैं' के भाई को मातारानी आने पर 'मैं' की माँ पूजा पाठ करवाती है तथा मनौतियाँ माँगती है फिर भी भाई की एक आँख चली जाती है। रंगई बहू इसी गाँव की रहनेवाली है, जिसने तीन शादियाँ की। तीनों पतियों की पहलेवाली संतानें और रंगई बहू की संतानें इस प्रकार घर में आठ-दस बच्चे और खाने का अभाव यहाँ पर प्रस्तुत किया है। 'मैं' गाँव में बहुत दिनों के बाद आता है, तब भी गाँव में

महामारी का फैलाव है और वही पुराने रीति-रिवाज तथा रूढ़ि-परंपरा को गाँववाले निभाते हुए दिखाई देते हैं।

इस कहानी में दलित जीवन का चित्रण हुआ है। साथ ही यहाँ पर अंधश्रद्धा तथा पुराने रूढ़ि परंपराओं को निभाता हुआ 'मैं' का गाँव दृष्टिगोचर होता है।

2.2.3.3 'लांगसाइट' -

'लांगसाइट' कहानी में कथानायक हराधन दा के माता-पिता को दंगाइयों ने काट डाला था, बहन माधवी को उठाकर ले गए थे। हराधन दा ऐसे लोगों से नफरत करते हैं, जो समाज में बिना वजह दंगा-फसाद करते हैं। कोई लड़कियों की छेड़छाड़ करता हो तो हराधन दा उन्हें पीटते हैं। हराधन दा कोयलेवालियों के जीवन पर लंबे-लंबे भाषण देते हैं और कोयला चुननेवाली फूचकीदेवी से शादी करते हैं। बेटा पुटूल और बेटी रेवादी ऐसी दो संतानें हराधन दा को थी, लेकिन बेटी रेवादी सेठ के द्वारा 'हाविश' कर ली गई थी। हराधन दा जो जुल्म के खिलाफ आवाज उठाते थे वह अब चुपचाप रहने लगते हैं। पुटूल केरोसीन लेने जाता है, तब सेठ केरोसीन खत्म होने की घोषणा करता है। पुटूल काला धंदा करनेवाले सेठ के खिलाफ आवाज ऊठाता है, तब सेठ के गुंड़े पुटूल को मारते हैं। पुलिस भी सेठ के कहने पर पुटूल को थाने में बंद करती है। फुचकी देवी अपने निरपराध बेटे को मारनेवाले लोगों को गालियाँ देती है। पुटूल की रिहाई नहीं होती तब हराधन दा अपनी शिकायत मुख्यमंत्री तक पहुँचाने के लिए अखबार का पत्रवाला कॉलम चुनते हैं।

इस कहानी में लेखक ने कट्टर मार्क्सवादी हराधन को प्रस्तुत किया है। हराधन दा जुल्म के खिलाफ पहले विद्रोह करते थे। लेकिन जुल्म का कोई अंत नहीं यह देखकर वह चुपचाप रहने लगते हैं। बेटे पुटूल पर भी झूठा इल्जाम आने पर वह अखबार में पत्रवाला कॉलम चुनकर अपनी शिकायत मुख्यमंत्री तक पहुँचाते स्पष्ट हुए हैं।

2.2.3.4 'चुतिया बना रहे हो' -

'चुतिया बना रहे हो' कहानी में गंदी राजनीति के दर्शन होते हैं। भूतपूर्व मुख्यमंत्री प्रताप सिंह अपने जाति का मुख्यमंत्री बन जाए, इसीलिए सिंहपुर की सभा में उदयभान सिंह को

ब्रिठाकर सुर्यभान सिंह को चुनाव लड़ने का सुझाव देते हैं। प्रताप सिंह और जाति की सरकारी सुविधाएँ अपनी सिंह जाति में बटोरता है। मनबोध सिंह भी सिंह जाति के हैं। मनबोध सिंह को कमाने-खाने के लिए प्रधान द्‌वारा 'लॅंड स्पिच्चर' दिया जाता है। लेकिन मनबोध सिंह गैर जाति का टुकड़ा क्यों दिया गया यह सवाल भरी सभा में प्रताप सिंह से पूछता है। प्रताप सिंह तथा उनके समर्थक मनबोध सिंह का अपमान करके चुप बिठाते हैं। मनबोध सिंह का मन-ही-मन में विद्रोह चलता है कि वह चीख-चीखकर इन स्वार्थी, भ्रष्ट, राजनीति के कारनामें सारे लोगों को बताए। परंतु सभा में खुद को अकेला पाकर चुप बैठता है। प्रताप सिंह भाषण देने के लिए खड़े होते हैं तभी ऐन मौके पर माइक खराब होता है। मनबोध सिंह का बेटा रघुवीर सिंह माइक ठीक करने की कोशिश करता है। प्रताप सिंह जानता है कि रघुवीर जान-बुझकर माइक ठीक नहीं कर रहा है, तब वह रघुवीर को गाली देता है- 'चुतिया बना रहे हो' और तभी माइक ठीक होता है और सारी सभा यह गाली सुनती है।

इस कहानी में लेखक ने स्वार्थी राजनीति को स्पष्ट किया है। कुर्सी के लिए जातीयता स्पष्ट होती है तथा समाज के सामने शराफत का मुखौटा लगाकर घूमनेवाले नेता की असलियत समाज के सामने प्रस्तुत हुई है।

2.2.3.5 'फुटबॉल' -

'फुटबॉल' कहानी में कारखाने के मैनेजर सोमनाथ कापी करके, पैसे देकर तो कभी अतुल की उत्तर पत्रिका लेकर पास होता है। कारखाने में भी रिश्वत देकर पदोन्नती प्राप्त करता है टीम मैनेंजर, स्पोर्टस् अफसर, वेलफियर अफसर, पर्सनल मैनेंजर तक की पोस्ट पाता है। कथानायक अतुल अच्छे अंक प्राप्त करके तथा अच्छा फुटबॉल खेलने पर भी वह कारखाने में मजदूर की नौकरी पाता है। मैनेंजर सोमनाथ हमेशा मजदूरों को निचोड़ता रहता है। नौकर भर्ती के लिए सोमनाथ पंद्रह हजार की रिश्वत माँगता है तथा एक साल से इंटरव्यू की तारीख खिसकाता रहता है। नौकरी पाने आए युवक मिलने जाने पर उन्हें 'बिझी' है कहकर टरकाते हैं। अतुल भी अपने बेटे अशोक की नौकरी के लिए सोमनाथ के पास जाता है, तब वह पंद्रह हजार माँगता है। इस अन्याय के खिलाफ अशोक के साथ नौकरी के लिए आए अन्य युवक सोमनाथ के दफ्तर में

हमला बोल देते हैं। सोमनाथ को घेरकर अपने अधिकारों की माँग करते हैं। तब सोमनाथ सबसे माफी माँगता है। अतुल को इन लोगों को समझाने के लिए कहता है, लेकिन अतुल भी इन युवकों क साथ देता है और विद्रोह करता है।

इस कहानी में युवकों की सजगता तथा कारखानों में चलता शोषण एवं भ्रष्टाचार प्रस्तुत हुआ है। साथ ही युवकों का विद्रोह स्पष्ट हुआ है।

2.2.3.6 'अंतराल' -

'अंतराल' कहानी में कथानायक रामकुमार अपने मामी के साथ मेले में जाता है। तब वहाँ पे एक चुलबुली लड़की उसे भाँति है। मामी से उस चुलबुली लड़की के बारे में पूछने पर पता चलता है कि वह उसकी ब्याहता बहू है। बचपन में ही रामकुमार का गवना लहुरा पट्टीवाली से हुआ है आदि बातें जानने पर रामकुमार लहुरा पट्टीवाली से हर रोज मिलने जाता है तथा उसे चोली खरीदकर पहनाता है। लहुरा पट्टीवाली बदचलन है, वह किसी लड़के को छुप-छुपकर मिलती है आदि सारी बातें रामकुमार के परिवारवालों को पता चलती हैं और रामकुमार का गौना तोड़ देते हैं। रामकुमार लहुरा पट्टीवाली बेकसूर है, उसका कोई कसूर नहीं है कहता है लेकिन उसकी बात कोई नहीं मानता। रामकुमार की माँ लहुरा पट्टीवाली बदचलन है तथा टोनही है ऐसी बातें करती रहती है। रामकुमार की बहन विधवा होने पर उसका दूसरा ब्याह करते हैं और उसी की विधवा ननद से रामकुमार का ब्याह होता है। रामकुमार की मामी इस रिश्ते को लेकर रामकुमार की माँ से झगड़ा करती है और लहुरा पट्टीवाली का कसूर जानना चाहती है। रामकुमार की माँ मामी को समाज के नीति-नियम, कानून को स्पष्ट करती है। मामी कहती है अगर गौना तोड़ना ही था तो बचपन में इनका गठबंधन क्यों किया ? तथा समाज के ऐसे नीति-नियम नहीं मानती जो नारी को इज्जत नहीं देती तथा उसको न्याय नहीं दे पाती। रामकुमार एक बच्चे का पिता बनता है। एक बार वह अपने बच्चे को मेला देखने के बहाने लहुरा पट्टीवाली से मिलने जाता है। लहुरा पट्टीवाली रामकुमार के बेटे से बहुत प्यार करती है, उसे तेल उबटन लगाती है, खिलाती है। लहुरा पट्टीवाली को एक बात खलती है कि रामकुमार ने उसकी बेटी को छुआ तक नहीं और इस बात का जिक्र करती भी है। तब रामकुमार अपने बेटे के लिए उसकी बेटी का हाथ माँगता है। तब

लहुरा पट्टीवाली कहती है- "फिर वही भूल ? अरे उमर-समय पर होगी तो होगी आदमी को गाय-बैल समझने की चलन से तो छुटकारा पाइये.... और फिर इस बात की क्या गारंटी है कि यह तुम्हारे जैसा नहीं होगा ?"[1]

इस कहानी में रिश्तों के संबंध में अंतराल का अर्थ परिस्थितियों और जीवन की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। बालविवाह की समस्या तथा लहुरा पट्टीवाली पर झूठा इल्जाम लगाकर गौना तोड़ने जैसी नारी शोषणयुक्त समस्याओं का चित्रण हुआ है।

2.2.3.7 'जब नशा फटता है' -

हिंदू धर्म में जातीय भेदाभेद तथा छुआ-छूत से तंग आकर मेहतर समाज के लोग धर्म परिवर्तन करते हैं। मुस्लिम धर्म में जातीय भेदाभेद नहीं है यह मानकर मेहतर लोग मुस्लिम धर्म स्वीकारते हैं। हिंदू समिति के लोग मेहतर लोगों को फिर से हिंदू धर्म अपनाने के लिए कहते हैं। मेहतर लोग हिंदू समिति सदस्य के साथ आए गुरुजी के पास ब्राह्मण या छतरी जात की माँग करते हैं। गुरुजी उन्हें पूछते हैं कि क्या मौलवी साहब ने सैय्यद, शेख या पठान इनमें से कौनसी जात दी है। तब मेहतर लोगों को ज्ञात होता है कि मुस्लिम समाज में भी जातीयता है। मेहतर लोगों को दुःख होता है कि समाज में उनका अस्तित्व न के बराबर है और वे शराब पीकर सारे शहर में मंदिर, मस्जिद, स्कूल, रास्तें आदि जगह मैला फेंकते हैं तथा मार-पीट करते हैं। मेहतर लोगों को बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुँचाया जाता है। इन्स्पेक्टर बयान लेने आने पर वे बताते हैं कि जातीधर्म का नशा चढ़ जाने से यह मार-पीट हो गई है।

इस कहानी में लेखक ने अछूतों का समाज में क्या स्थान है ? यह स्पष्ट किया है। मेहतर लोग समाज में मनुष्य बनकर जीना चाहता है, इसीलिए धर्म परिवर्तन करता है परंतु मुस्लिम धर्म में भी जातीयता पाकर दुःखी होता है। यहाँ पर छुआ-छूत तथा धर्मपरिवर्तन की समस्या दृष्टिगोचर हुई है।

---

1. संजीव - भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ - 77

2.2.3.8 'नौटंकी' -

'नौटंकी' कहानी में रामलीला, रासलीला, शैव्या, द्रौपदी आदि अनेक प्रकार के नाटक पेश किए जाते हैं। इन नाटकों में काम करनेवाले लोगों के प्रति सामान्य आदमी बड़े सन्मान एवं आदर से देखता है। उनकी रूप-सज्जा, अभिनय आदि की लोग दाद देते हैं। एक छोटा लड़का भी नौटंकी देखने जाता रहता है। उसे राम-लक्ष्मण, सीता, शैव्या आदि पात्रों के प्रति बहुत आदर है। इन पात्रों को देखकर वह भावविह्वल होता है और उन्हें मिलना चाहता है तथा नजदीक से देखना चाहता है। एक बार वह पर्दे के पीछे जाकर इन पात्रों की असली जिंदगी से परिचित होता है। रावण का पैर दबाने में व्यस्त राम-लक्ष्मण, पान लेने जाता हनुमान, बचे हुए पैसों के लिए छिना-झपटी करनेवाले राम-लक्ष्मण साथ ही राधा-कृष्ण को बीड़ी पीते हुए देखकर लड़के को इन पात्रों के प्रति घृणा उत्पन्न होती है। सीता, सावित्री, द्रौपदी, शैव्या आदि किरदार निभानेवाली मैना का अश्लील नृत्य देखकर बच्चे के मन में पाप आता है। लड़के का कहना है जिन आदर्शों को हम जन-मानस में फैलाने के लिए नौटंकी करते हैं, कम-से-कम उन आदर्श चरित्रों को खुद के मन में प्रतिबिंबित करना चाहिए।

इस कहानी में नौटंकी देखकर छोटे बच्चे पर होनेवाले संस्कार तथा पर्दे के पीछे राम-लक्ष्मण, हनुमान को देखकर उसके मन पर हुए प्रभाव को और लड़के के विचारों को लेखक ने यहाँ स्पष्ट किया है।

2.2.3.9 'मुर्दगाह' -

'मुर्दगाह' कहानी में कथानायक 'मैं' के अब्बा तकियादार हैं। 'मैं' के अब्बा तथा मनोहर चाचा में गहरी दोस्ती है। मनोहर चाचा वेश्या मुसन्नी से बहुत प्यार करते हैं। मनोहर चाचा अपने दिल की बात मुसन्नी से करने जाते हैं, तब वह अपनी बेटी रजिया को मनोहर चाचा के हवाले करती है और वेश्या बस्ती से बाहर ले जाने के लिए कहती है। मनोहर चाचा छोटी रजिया को लेकर भाग जाते हैं, तब मुसन्नी को बस्ती के गुंड़े जान से मार देते हैं। 'मैं' के अब्बा पर लाश चोरी का झूठा इल्जाम आने पर मनोहर चाचा अपनी जान देकर लाश चोरी करनेवाले असली गुनाहगारों को पकड़वाते हैं। मरते वक्त मनोहर चाचा रजिया की जिम्मेदारी 'मैं' के अब्बा को सौंपता है।

लाशे चुरानेवालों को सजा ए मौत होती है, लेकिन इस फैसले के खिलाफ अपराधी उच्च न्यायालय में अपील करते हैं। उच्च न्यायालय भी मनोहर चाचा के कातिलों तथा लाश चोरी करनेवालों का जल्दी फैसला नहीं सुनाती। 'मैं' के अब्बा उच्च न्यायालय का फैसला सुने बिना दुनिया से चले जाते हैं। मरते वक्त रजिया का हाथ 'मैं' को देते हैं। कुछ दिनों बाद लाशों के सौदागर बाइज्जत बरी हो जाते हैं।

अतः इस कहानी में अंधे कानून का जिक्र हुआ है साथ ही इसमें अपने दोस्त के खातिर जान देनेवाले मनोहर चाचा की सच्ची दोस्ती के दर्शन भी दिखाई देते हैं।

2.2.3.10 'सीपियों का खुलना' -

'सीपियों का खुलना' इस कहानी में कथानायक प्रदीप जो उपसंपादक है और कथानायिका ललिता एक-दूसरे से प्यार करते हैं। लेकिन दोनों के परिवारवालों को इनकी शादी मंजूर नहीं है। ललिता के परिवारवाले कमाऊ बेटी खोना नहीं चाहते थे और प्रदीप के परिवारवाले महानगरीय बहू नहीं चाहते क्योंकि वह गंदगी तथा बदहाली से बिदककर कहीं अलग घर ना बसा ले। ललिता प्रदीप को किसी लेखिका द्वारा लिखा गया प्यार का फलसफा बताती है कि प्यार एक ऐसा बिच्छू का जहर है, जो आँखों से चढ़ता है और जांघो पर उतरता है। प्रदीप ललिता को प्यार की परिभाषा इस प्रकार बताता है- "प्यार सीपियों का युग्मक है।"[1] तब ललिता इस अश्लील बिंब पर घृणा करती है। प्रदीप कहता है सीपियों के अंदर जो कीड़ा है, वह सागर की लहरों का घात-प्रतिघात सहता हुआ उछाल खाता रहता है। लेकिन ललिता को वह कीड़ा पसंद नहीं है। प्रदीप की शादी के लिए उसके पिता एक लड़की पसंद करते हैं तब प्रदीप ललिता के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है। प्रदीप ललिता को शादी के बाद दोनों परिवारों की जिम्मेदारी संभालनी है ऐसा कहता है। फिर ललिता प्रदीप को उपसंपादकी छोड़कर आय.ए.एस्. या पी. सी. एस्. में कोशिश करने की सलाह देती है वह कहती है- "वह ईमानदार और बदहाल बाप की बेटी होने का खमियाजा भुगत चुकी है। तब प्रदीप कहता है- एक ईमानदार और बदहाल की पत्नी बनकर जीने

---

1. संजीव - भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ - 125

14807

का खतरा नहीं उठा सकती।''[1] ललिता शादी से इन्कार करती है, तो प्रदीप दुःखी होता है और वह एक वेश्या के साथ रात गुजारता है। सुबह ऊठने पर उसे अपने-आप से घीन आती है। प्रदीप अपनी तुलना सीपियों के अंदर रहते उस घिनौने कीड़े से करता है जो सागर की लहरों का घात-प्रतिघात सहता हुआ उछाल खाता रहता है। लेकिन प्रदीप इसके लिए ललिता को ही दोषी ठहराता है।

अतः इस कहानी में ललिता और उपसंपादक इन दोनों का प्रेम स्वार्थी नजर आता है। ललिता अपना जीवन सुखमय बिताना चाहती है, तो प्रदीप दोनों परिवारों की जिम्मेदारी अकेली ललिता पर सौंपना चाहता है। साथ ही प्रदीप का प्यार शारीरिक आकर्षण दिखाई देता है।

2.2.4 *'दुनिया की सबसे हसीन औरत'* -

यात्री प्रकाशन दिल्ली से सन् 1990 में प्रकाशित 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' यह संजीव जी का चौथा कहानी संग्रह है। इसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं। 'घर चलो दुलारीबाई' में विधवा दुलारी का शोषण प्रस्तुत हुआ है। 'दो बीघे ज़मीन' में रिटायर्ड भगत को दो बीघे जमीन के लिए अपनी जान गवानी पड़ती है इसका चित्रण हुआ है। 'पिशाच' में महातम बाबा अपना अस्तित्व पिशाच बनकर बनाए रखते हैं। 'वापसी' कहानी में फौजियों का अत्याचार प्रस्तुत हुआ है 'गो-लोक' कहानी में घिनहू सेठ को गो-लोक जाने की इच्छा है, इसके लिए वह गो-सेवा करता है तथा अंत में गाय द्वारा ही गोलोकवासी होता है यह चित्र अंकित किया है। 'चुनौती' कहानी में कामता की मिल मालिक के खिलाफ उठाई ललकार प्रस्तुत हुई है। 'शिनाख्त' में छात्रावास में युवकों का होता शोषण प्रस्तुत हुआ है। 'नेता' में मंत्रियों के झूठे आश्वासनों का पर्दाफाश किया है। 'बाढ़' कहानी में तिरबेनी काका के जीवन को प्रस्तुत किया है। 'ऑपरेशन जोनाकी' में एक ईमानदार पुलिस अफसर की सच्चाई एवं निर्भिड़ता प्रस्तुत की है। 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' में औरतों को अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा प्रदान की है। इन समस्त कहानियों का वस्तुपरक विवेचन निम्न रूप से है -

---

1. संजीव - भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ - 125

2.2.4.1 *'घर चलो दुलारीबाई'* -

कथा नायिका दुलारी की शादी बैसवाड़े के बड़के घर में होती है। बैसवाड़े में औरतों की स्थिति शूद्रों जैसी है। दुलारी गर्भवती है तभी उसके पति की मृत्यु होती है। दुलारी को बेटा होता है, जो ससुराल तथा मायके की जायदाद का अकेला वारिस है। दुलारी के बेटे को कोई जहर देकर मार देता है। विधवा असहाय दुलारी को जेठ तथा देवर की वासना का शिकार बनना पड़ता है। सास, जेठानी तथा देवरानी भी विधवा दुलारी पर मानसिक अत्याचार करती है। दुलारी पर खिस्सू हलवाही तथा मुश्ताक अहमद के साथ नाजायज संबंध का झूठा इल्जाम लगवाकर घर से तथा समाज से बहिष्कृत करते हैं। दुलारी इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है तथा अपने अधिकार के लिए अदालत तक जाती है। दुलारी उसरहटे में रहकर अपना गुजरान करती है। दुलारी के मायकेवाले तथा ससुरालवाले झूठे गवाह पेश करके तथा धन बटोरकर दुलारी को मृत घोषित करते हैं। जज मुश्ताक भी दुलारी के खिलाफ फैसला सुनाता है। दुलारी अदालत का गलत फैसला सुनकर बहुत रोती है। उसरहटे का समझू आकर दुलारी को समझाता है और खिस्सू हलवाही का बेटा उसे अपने घर ले जाता है।

इस कहानी में दुलारी का उसके परिवारवालों से हुआ शोषण प्रस्तुत हुआ है। अंधे कानून के कारण अबला, असहाय दलित नारी दुलारी पर अन्याय होता है। साथ ही अनपढ़ होकर भी अपने अधिकार के लिए लड़ना यह चेतित नारी को स्पष्ट करता है।

2.2.4.2 *'दो बीघे ज़मीन'* -

'दो बीघे ज़मीन' कहानी में कथानायक भगत कारखाने में नौकरी करते हैं। अपनी जन्मभूमि में रहने के लिए भगत अपने गाँव में दो बीघे ज़मीन खरीदते हैं। भगत अपनी बेटी की शादी भी कराते हैं। बीमारी के कारण पत्नी दुनिया छोड़कर चली जाती है। रिटायर्ड होने के बाद भगत अपने गाँव भतीजों के पास आते हैं। भगत का स्वागत बड़े जोर-शोर से होता है। बाद में उन्हें सेवानिवृत्ति के जो पैसे मिलते हैं, उसके बारे में भतीजे पूछते हैं। साथ ही उनकी जगह किसे नौकरी मिलेगी आदि सवाल करते हैं। भगत बताता है दो बीघे ज़मीन का कर्जा उतार दिया है तथा कारखाने में नौकरी की सुनवाई नहीं की गई है। फिर दोनों भी भतीजे दो बीघे ज़मीन का बँटवारा

करने की बात करते हैं। नाती भी दो बीघे ज़मीन तथा पैसों के लिए भगत को छेड़ती है। इससे बचने के लिए भगत बेटी के घर जाना चाहते हैं, परंतु बेटी ही अपने दोनों बेटों के साथ पिता से मिलने मायके आती है। वह भी पिता के पास दो बीघे ज़मीन की माँग करती है। पिता की चुप्पी देखकर वह गुस्से से वापस ससुराल चली जाती है। गाँव के ग्रामप्रधान, उपधिया, ठेकेदार, कमलसिंह, दूबे आदि लोग भी भगत को परिवारवालों के खिलाफ भड़काकर उसकी ज़मीन हथियाना चाहते हैं तथा भगत का जीना भी हराम करते हैं। दो बीघे ज़मीन के लिए परिवार के साथ गाँव के यह प्रतिष्ठित नागरिक भी आपस में मार-पीट करते हैं। इसी मार-पीट में भगत की दो बीघे ज़मीन के कारण जान चली जाती है।

इस कहानी में मानव के स्वार्थी स्वभाव का दर्शन होता है। सेवानिवृत्त भगत सुख-चैन पाने के लिए अपनी जन्मभूमि में आता है। जन्मभूमि में भतीजे, बेटी और गाँव के पूँजीपति दो बीघे जमीन के लिए भगत का जीना हराम करके उसे हमेशा के लिए मीठी नींद सुलाते हैं।

2.2.4.3 'पिशाच' -

'पिशाच' कहानी में पूँजीपति महातम बाबा गाँव के लोगों पर बहुत अत्याचार करते हैं। महातम बाबा के शोषण से तंग गाँववाले उनके मौत की कामना करते रहते हैं। महातम बाबा के बारे में कथानायक 'मैं' कहता है- ''वे गोसाई जी की अमूर्त सत्ता की तरह अक्षय है।''[1] 'मैं' का परिवार महातम बाबा के यहाँ हलवाही करता है। 'मैं' के काका महातम बाबा के यहाँ आम के बाग की रखवाली करते वक्त बेफिक्र होकर सोते हैं। तब महातम बाबा की क्रोधाग्नी का शिकार उन्हें होना पड़ता है। 'मैं' के काका महातम बाबा के जीतेजी गाँव में कदम न रखने की प्रतिज्ञा लेकर गाँव छोड़ते हैं। महातम बाबा द्वारा शोषित कलेशर, जहूरा तथा शिवजतन आदि लोग भी महातम बाबा को शाप देकर मरते हैं। महातम बाबा की जिसमानी हवस के शिकार रमेशर और उसकी माँ भी है। रमेशर कल-बल-छल से ग्राम किसान तथा ग्राम समाज के साथ-साथ महातम

---

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 29

बाबा की सारी जमीन हड़पता है। बाबा का चौकवा जैसा ऊपजाऊ खेत हथियाने पर बाबा जनेऊ तोड़कर पीपल पर टांगते हैं। महातम बाबा पीपल के तले झिलंगी खाट डालकर कल्पवास लेते हैं।

महातम बाबा की आर्थिक स्थिति दयनीय होती है तथा उनके दोनों बेटे उमाकांत तथा रमाकांत की मौत होती है। गाँव के लोग भी शहर में नौकरी के लिए जाते हैं। वे गाँव आने पर महातम बाबा को सलाम करने जाते हैं और शहर से कुछ-न-कुछ चीजें लाकर देते रहते हैं। 'मैं' भी शहर से आने पर महातम बाबा को मिलता है, तब वह अपने नातियवन को शहर ले जाकर नौकरी लगाने की बात करते हैं। बाबा की बहू भी गाँव में काम तलाशती है, परंतु गाँववाले बाभन से काम करवाना पाप समझते हैं। रमेशर के पास रात के वक्त जाने पर बाबा की बहू को रमेशर उसकी बेटी सुमन को भेजने की बात करता है। बाबा आर्थिक स्थिति से तथा शरीर से दुर्बल होने पर भी अपनी ऐंठ नहीं छोड़ते हैं। दूबे जी महातम बाबा के बारे में कहते हैं- ''तुम बच्चे से जवान, जवान से बूढ़े होकर मर जाओगे, लेकिन यह पिशाच यूँ नहीं मरनेवाला। पहले बाबा माँ की गाली देते थे, अब बहन की, कोई आश्चर्य नहीं कल को बेटी तक की खबर ले।''[1] 'मैं' को दूबे की बात समझ में नहीं आती है।

'मैं' बहुत दिनों के बाद गाँव जाता है, घर जाने के बजाय सीधे महातम बाबा की बखरी पर पहुँचता है। महातम बाबा की बखर पूरी तरह खंड़हर हो चुकी है, घर में भी किसी का अस्तित्व नजर नहीं आता। महातम बाबा का अस्तित्व जानने के लिए 'मैं' एक ढेला ऊठाकर पेड़ पर फेंकता है, तब 'मैं' को बाबा बेटी को गाली देते सुनाई देते हैं। 'मैं' का कहना है महातम बाबा पिशाच की तरह पीपल के पेड़ पर अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

इस कहानी में उच्च वर्ग के लोग परिस्थिति कमजोर होने पर भी अपनी शेखी बघारते हैं। महातम बाबा इसके उदाहरण हैं, जो आर्थिक स्थिति तथा शरीर से दुर्बल होने पर भी उनकी शेखी बघारनी की वृत्ति बदलती नहीं है।

*2.2.4.4 **'वापसी'*** -

'वापसी' कहानी में देश को आज़ाद करने के लिए मित्र देश के फौजी सहायता के लिए आते हैं। देश आज़ाद होने पर मित्र देश के फौजी देश की हजारों कुमारियों और जवान

---

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 42

औरतों की इज्जत लूटकर उन्हें गर्भवती बनाकर चले जाते हैं। टोनी का जन्म भी इसी वारदात में होता है। टोनी को पिता का नाम नहीं मालूम और माँ भी कुछ नहीं बताती है, इसीलिए वह माँ को घृणा से देखता है। टोनी फौज में भर्ती होने पर माँ कहती है- "आखिर खून किसका है ?"[1]

मित्र देश जब शत्रू देश बनता है और लड़ाई शुरू होती है तब टोनी भी चला जाता है। टोनी अपनी ड्युटी पूरी ईमानदारी से निभाता है। लड़ाई के वक्त गाँव में लूट-पाट होती है, लूट-पाट में जो गहने मिलते हैं उसके बँटवारे को लेकर मेजर तथा प्लाटून नायक में झगड़ा होता है। झगड़े में गोली चलने पर मेजर की मौत होती है। सिग्नलमैन को भी स्पाइ कहकर जान से मारते हैं। टोनी को ड्युटी के वक्त एक घायल औरत नजर आती है जिसे वह कमांडिंग अफसर के हवाले करता है। कमांडिंग अफसर तथा अन्य फौजी उस घायल औरत पर सामूहिक बलात्कार करते हैं। उस घायल औरत को दुश्मन के कैंप में भेजकर वहाँ से शराब तथा मांस की बोटियाँ लाते हैं। दुश्मन के कैंप में भी उस औरत पर शारीरिक अत्याचार करते हैं। मरे हुए मेजर के साथ अपने साथियों का समलैंगिक संबंध टोनी देखता है तो उसे अपने साथियों का तथा कमांडिंग अफसर का बर्ताव अच्छा नहीं लगता। लेकिन वह उनसे कुछ नहीं कह सकता। लड़ाई खत्म होने की सूचना मिलने पर अपने स्थान वापस जाने का निर्णय कमांडिंग अफसर लेता है। जाते समय वह फौजियों से कसम भी लेता है कि मेजर तथा सिग्नलमैन की हकिकत किसी को नहीं बताएँगे तथा लूटे हुए गहने भी इत्मीनान से बाँट लेंगे। गहनों की पोटली टोनी के पास रहती है और सब अपने स्थान निकल पड़ते हैं। रास्ते में एक औरत नजर आने पर सारे फौजी उस औरत पर टूट पड़ते हैं। टोनी सारे फौजियों को गोली से भून देता है और उस औरत को बचा लेता है। टोनी खुश होता है कि उस औरत को वह बचा पाया। उस औरत को कंधे पर डालकर वह निकल पड़ता है।

संक्षेप में इस कहानी के अंतर्गत फौजियों की वासनांध विकृति एवं अपनी वर्दी का गलत इस्तेमाल करते हैं।

2.2.4.5 'गो-लोक' -

'गो-लोक' कहानी में सेठ भोजराज को बड़ी मन्नते एवं दुवाओं से पुत्र-प्राप्ति होती है। संतान जीवित रहे इसीलिए उसका एक गंदा-सा नाम रखते हैं घिनहूदास। सेठ भोजराज तथा

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 56

सेठ घिनहूदास अपनी बस्ती में मंदिर, विद्यालय, धर्मशालाएँ, अनाथालय, स्कूल आदि बनवाते हैं। सेठ घिनहूदास को सबसे ज्यादा रुचि गो-सेवा करने में है। सेठ घिनहूदास की फैक्टरी है, उसमें पाँच सौ इक्यावन आदमी काम करते हैं। लेकिन एक भी मजदूर परमनेंन्ट नहीं है तथा मुस्लिम लोगों को फैक्टरी में प्रवेश वर्जित था। शफ़िक की माँ ने घिनहूदास जीवित रहे इसलिए बचपन में मुट्ठीभर रूई में उसे खरीदा था। उस ऋण से मुक्ति पाने के लिए वह शफ़िक को फैक्टरी में नौकरी देते हैं। शफ़िक फैक्टरी के मजदूरों को उनके अधिकारों के प्रति चेतित करता रहता है। सेठ शफ़िक की इस हरकत पर उसे अपने गुंड़ों द्वारा पीटवाता है तब शफ़िक लुंज हो जाता है।

घिनहूदास गाय की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करनी है, इसीलिए गो-सेवा करने में लीन रहते हैं। घिनहू से एक भव्य गो-शाला बनवाते हैं। वह हर रोज हर गाय की पूजा करते हैं। गाय की आरती उतारना, उसके खुर छूकर प्रणाम करना तथा उसे दो-दो पराठे और एक डली गुड़ खिलाना आदि प्रकार की गो-सेवा करते हैं। शफ़िक की बीमारी के कारण शफ़िक की बीवी ऊपले बनाकर बेचती है और अपना घर-खर्च चलाती है। शफ़िक के दो बच्चे घर की दयनीय स्थिति के कारण मर जाते हैं। शफ़िक की एक नाटी गाय है, जो एक दिन सेठ जी का मैला खाने पर सेठ गुस्सा होता है और शफ़िक को जबरदस्ती तीन सौ रुपए देकर नाटी गाय अपनी गो-शोला में भर्ती करवाता है। शफ़िक की बीवी बहुत रोती है, लेकिन सेठ के क्रोधाग्नी से डरकर कोई कुछ नहीं कहता तथा शफ़िक भी चुप बैठता है।

एक दिन शफ़िक की बीवी प्रसव वेदना से ग्रस्त रिक्शा से अस्पताल जाते समय रास्ते में सेठ जी के ट्रक खड़े रहने से रिक्शा बीच रास्ते में ही अटक जाती है। शफ़िक सेठजी से बिनती करता है, सेठजी के लोग भी एक-एक आकर ट्रक बीच में से निकालने के लिए कहते हैं। लेकिन पूजा पूरी होने पर ही वह आएँगे ऐसा कहते हैं। नाटी गाय अपनी मालकिन की गंध पाकर सेट को धक्का देती है और मालकिन के पास आकर उसे चाटती है। शफ़िक की बीवी सड़क पर ही प्रसव होती है। सेठ नाटी को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं तो नाटी छलाँग लगाती है। सेठ नाटी गाय को पकड़ने के चक्कर में झटका खाकर गोबर की दलदल में गिरकर गो-लोकवासी होते हैं। शफ़िक की बीवी की स्थिति देखकर बस्ती के लोग शफ़िक से माफी माँगते हैं तथा सेठ से अपने अधिकारों की माँग करने के लिए वह शफ़िक का साथ देने की बात करते हैं।

इस कहानी में लेखक ने उच्च वर्ग का शोषण, अंधश्रद्धा तथा लोगों में होते हृदयपरिवर्तन को भली-भाँति अंकित किया है।

2.2.4.6 'चुनौती' -

कथानायक कामतानाथ राय एक कारखाने में मोल्डिंग मिस्तरी का काम करते हैं। कारखाने में जापानी मशीनें लगवाकर मजदूरों को काम करवाने की मिल मालिक की साजिश के खिलाफ कामतानाथ तथा अन्य मजदूर आवाज ऊठाते हैं। कामता को विश्वास था कि उसकी जगह पर उसके बेटे प्रदीप को नौकरी मिलेगी। परंतु उसे अपनी ही नौकरी का भरोसा नहीं रहता है। गाँव जाने की सोचता है, लेकिन गाँव से नौकरी के लिए उनका भतीजा आता है। मत्स्यपालन में असफलता मिलने के कारण वह कामतानाथ के पास आता है। कामतानाथ टी. व्ही. पर प्रधानमंत्री का भाषण सुनते हैं कि - ''हमें रोजगारी और विकास दोनों में से एक ही को प्राथमिकता देनी होगी, यदि आप रोजगारी चाहते हैं तो विकास नहीं और यदि विकास चाहते हैं तो रोजगार को.....।''[1] प्रधानमंत्री का यह वक्तव्य उन्हें भद्दी गाली-सा लगता है। वे कहते हैं कि हम मजदूरों ने कौनसा कसूर किया है, जो हमें नौकरी से निकलवाकर मशीनें लगवा रहे हैं। देश के विकास के लिए मनुष्य को मार रहे हैं।

कामतानाथ कारखाने में जाते हैं तो वहाँ पे नई मशीनों को रखने के लिए जगह बना रहे हैं। कारखाने का स्क्रैप का माल ऊठाकर ट्रक में भरते हैं। कामता को स्लीपर्स की डिझायनिंग और कास्टिंग के लिए पुरस्कार मिला था। उन्हीं स्लीपर्स को भी स्क्रैप का माल कहकर हटाते हैं। कामता को यह देखकर गुस्सा आता है और वह मिल मालिक को चुनौती देता है। कामता स्लीपरों पर लेटकर 'चलाओ हम्मड़' कहता है। यहाँ पे उसकी ललकार चुनौतीपूर्ण नजर आती है।

इस कहानी में कामतानाथ अपने अधिकार के लिए जान देने के लिए तैयार दिखाई देता है। देश की प्रगति के लिए मजदूरों का शोषण करते कारखाने के मालिक अपने लाभ के लिए दलितों का शोषण करते दृष्टिगोचर हुए हैं।

---

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 82

2.2.4.7 'शिनाख्त' -

'शिनाख्त' कहानी के अंतर्गत छात्रावास में नए आए हुए लड़कों का शोषण प्रस्तुत हुआ है। छात्रावास में नक्सलवादियों ने बम फोड़ा है, ऐसा मानकर पुलिस बॉइज छात्रावास की शिनाख्त करने आते हैं। हर एक लड़के को मार-मारकर नक्सलवादियों के बारे में पूछते हैं। असलम बताता है कि सत्यनारायण सिंह जो बड़े बाप का बेटा है, वह छात्रावास में भर्ती हुए नए लड़कों पर रैगिंग करता है। नए लड़कों को मारना-पीटना, दागना आदि अत्याचार करता है। सर्वजीत सिंह बताता है पवनकुमार मिश्र के चुतड़ पर सत्यनारायण सिंह ने सिगरेट से दागा है। उसे अस्पताल ले जाते वक्त सत्यनारायण सिंह ने बम फेंका है। साथ ही वह जातीय रंग दिखाकर लड़ाई-झगड़ा करवा रहा है। पुलिस सारे लड़कों को एक हॉल में जमा करके एक लाइन में खड़ा करती है। एक बुरकेवाली आकर एक-एक लड़कों को छाँटकर अलग खड़ा करती है। सारे लड़के डर के मारे भगवान को याद करते हैं। प्रदीप बड़े साहस के साथ बुरकेवाली का बुरका खिंचता है, तो बुरके के अंदर से सत्यनारायण सिंह का चेहरा पर्दाफाश होता है, जो लड़कों को डराकर उनका शोषण कर रहा है।

इस कहानी में समाज में उपस्थित नई समस्या रैगिंग को दृष्टिगोचर किया है। सामान्य लड़के इन पूँजीपति लड़कों की मौजमस्ती का शिकार कैसे होते हैं ? इसका वास्तविक चित्रण शिनाख्त कहानी में मिलता है।

2.2.4.8 'नेता' -

कारखाने में फार्नेस की आग में झुलसकर एक मजदूर की मौत होती है। सारे मजदूर इस अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं। अपने अधिकार के लिए मजदूर हड़ताल करते हैं। मजदूरों का साथ देने के लिए बाइसों युनियनें अपनी रोटी सेंकने पहुँच जाती हैं। चुनाव का माहौल देखकर मुख्यमंत्री भी सिर्फ आश्वासन देते हैं। दिग्विजय बाबू युनियन लीडर हैं, वह मरे हुए मजदूर के घर जाकर शोक प्रकट करते हैं। मजदूर की बेटी ममता को पी. ए. की नौकरी देना चाहते हैं, लेकिन वह इन्कार करती है। क्योंकि अन्य नेताओं ने भी उसे ऐसे ऑफर दिए हैं लेकिन वह किसी की सहानुभूति नहीं चाहती है। दिग्विजय बाबू चुपचाप चले जाते हैं। दूसरे युनियन के लोग

मजदूरों को न्याय देने के लिए आमरण अनशन करने की घोषणा करने पर, दिग्विजय बाबू डी. आय. जी. के ऑफिस के सामने आत्मदाह करने की घोषणा करते हैं। सुदर्शन बाबू दिग्विजय बाबू को बताते हैं कि आपका आत्मदाह किसी के काम नहीं आएगा। मरने पर आपका पुतला खड़ा करके अनावरण करेंगे, परिंदें बीट करेंगे। ममता तथा उसके अन्य साथी खिल्ली उड़ाएँगे आदि बातें सुनकर दिग्विजय बाबू को अपनी मौत पर रोना आता है। दिग्विजय बाबू ने इसी कारखाने के लिए मजदूरों की झुग्गियों में आग लगवाकर जगह खाली की थी और आज इन्हीं मजदूरों के लिए खुद जलने जा रहे हैं। दिग्विजय बाबू सपने में खुद को जलते हुए देखते हैं तथा उन्हें बचाने के लिए कोई नहीं आता इसीलिए सबको गालियाँ देते हैं और जोर-जोर से चिल्लाने लगते हैं। दिग्विजय बाबू की पत्नी उन्हें सपने से जगाती है। उनकी ऊँगली से जलती सिगारेट निकालती है और बर्नाल लगवाकर सुलाती है।

अतः इस कहानी के माध्यम से नेताओं के झूठे आश्वासन स्पष्ट हुए हैं। स्वार्थ भावना से मजदूरों का साथ देना तथा स्वयं की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए झूठा दिखावा करते नेता दिखाई देते हैं। मजदूर शोषण तथा नेताओं का असली चेहरा समाज के सामने उजागर किया है।

2.2.4.9 'बाढ़' -

'बाढ़' कहानी में कथानायक तिरबेनी काका बटुकपुर में रहते हैं। माता-पिता की मृत्यु के कारण वह अपने दो छोटे भाइयों की देखभाल में ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। शील-संकोच के कारण वह अनब्याहे रहते हैं। तिरबेनी काका के छोटे भाई सुन्नर तथा बाढू बाल बच्चेदार बन जाते हैं। जायदाद का बँटवारा ना हो इसलिए तिरबेनी काका देवता पुरुष हैं, बाल-ब्रह्चारी हैं कहकर चुप बिठाते हैं। मुसम्मात सोभागी तिरबेनी काका से शादी करने के लिए तैयार होती है। लेकिन परिवारवाले उनसे झगड़ा करके घर से निकलवाते हैं। तिरबेनी काका मंदिर में रहने लगते हैं। मुसम्मात सोभागी तिरबेनी काका को अपना हिस्सा माँगने के लिए कहती है। तिरबेनी काका के परिवारवालों को यह खबर मिलती है कि तिरबेनी काका अपना हिस्सा मुसम्मात सोभागी के नाम लिख रहे हैं। तब सुन्नर तथा बाढू तिरबेनी काका को बहला-फूसलाकर घर ले आते हैं। तिरबेनी काका को घर का मालिक कहकर उसकी आवभगत करते हैं। उनका हर-तरह

से खयाल रखते हैं। मुसम्मात सोभागी गंगा में डूबकर मरती है, तब तिरबेनी काका की आवभगत तथा बंदिश दोनों भी छूमंतर होती है। तिरबेनी काका अब किसी को भी फूटी आँख नहीं भाँते। उन्हें सूखी रोटी खाने के लिए देते हैं तथा उनका मानसिक शोषण करते हैं।

बटुकपुर में बाढ़ आती है, तब अनेक लोगों को जल समाधि मिलती है। डीह बाबा का स्थान भी निश्चिन्ह होता है तथा शिवबाबा का मंदिर भी बह जाता है। पशु-पक्षियों को घास की समस्या, इंधन की समस्या तथा निबटान की समस्या से बटुकपुरवाले ग्रस्त हैं। तिरबेनी काका अपने गाँव की यह हालत देखते-देखते सो जाते हैं। रात के वक्त बादू तथा सुन्नर के दोस्त मिलकर तिरबेनी काका को जान से मारते हैं। सुबह गाँव में यह खबर फैलाते हैं कि तिरबेनी काका बाढ़ में डूबकर मर गए। सारे गाँववाले उन्हें अवतारी पुरुष मानते हैं। तिरबेनी काका ने किसी की ओर गलत निगाह नहीं डाली तथा न किसी को दुःख दिया एवं किसी से बैर भी नहीं किया। इसीलिए उन्हें जलाना ठीक नहीं। या तो प्रवाह कर दे या उनकी समाधी बना दे। अतः डीह बाबा के स्थान पर उनकी समाधि बनाते हैं। तिरबेनी काका के भाई सुन्नर तथा बादू अपने भाई के ऋण से मुक्ति पाने के लिए तेरही के दिन सुगनी गाय का बाछा साँड बनाकर छोड़ते हैं और विधिवत पूजा करते हैं। दोनों भाई सारे गाँव को सुखी रखने की प्रार्थना करते हैं। सारे गाँववाले तिरबेनी काका का जय-जयकार करते नजर आते हैं।

इस कहानी में आपस के रिश्ते-नाते सिर्फ धन पर अवलंबित दिखाई देते हैं। आपस का प्यार तथा रिश्ते-नातों की एहमियत कम हो रही है इसे लेखक ने स्पष्ट किया है।

2.2.4.10 'ऑपरेशन जोनाकी' -

'ऑपरेशन जोनाकी' कहानी के कथानायक अनिमेष दा एक ईमानदार पुलिस अफसर हैं। इनके बेटे सौरभ का बचपन में ही अपहरण होता है। चिन्मय बागची नामक युवक को नक्सलवादी कहकर थाने में लाते हैं। पूछताछ करने पर भी वह अपने साथियों के नाम नहीं बताता। निहायत आत्मीयता से पूछताछ करके धीरे-धीरे तथ्यों का पता पाने के लिए अनिमेष दा चिन्मय बागची को अपने घर ले आते हैं। अनिमेष दा की पत्नी उसे अपना खोया हुआ बेटा समझकर बहुत प्यार करती है। उसके हर चीज का खयाल एवं पसंद-नापसंद का ध्यान रखती है। चिन्मय बीमार

पड़ने पर वह भाग दौड़ करके उसे अच्छा करती है। चिन्मय की सेहत के लिए मुर्गा पकाया जाता है। टेबल पर खाने के लिए बैठते हैं तभी पुलिस आते हैं और अदालत का ऑर्डर दिखाकर चिन्मय को ले जाते हैं। अनिमेष दा की पत्नी यह दुःख नहीं सह पाती और पागल होकर मरती है।

जोनाकी गाँव के भूमिहीन चासा और आदिवासी अपने अधिकार, भूमि, जंगल, मजदूरी तथा अस्मत के लिए आवाज उठाते हैं। गाँव का उच्च वर्ग इन आदिवासियों एवं दलितों के खिलाफ झूठा पुलिस केस दर्ज करवाता है। सत्येन शिक्षित युवक है, जो इन आदिवासी तथा भूमिहीन लोगों को अपने अधिकारों के प्रति सजग कराता है। सत्येन के कारण इनमें चेतना जागृत होती है और आदिवासी उच्च वर्ग के खिलाफ विद्रोह करते हैं। इनके विद्रोह को नाकाम करने के लिए पुलिस गाँव में दाखिल होती है। 'ऑपरेशन जोनाकी' नाम से जोनाकी गाँव में पुलिसों की ड्युटी शुरू होती है। 'ऑपरेशन जोनाकी' में अनिमेष दा जैसा निर्मम और सनकी पुलिस-अफसर को चुना जाता है। जोनाकी ग्राम के बूढ़े तथा औरतें रो-रोकर उच्च वर्ग का अत्याचार स्पष्ट करते हैं। इन लोगों की व्यथा सुनकर अनिमेष दा 'ऑपरेशन जोनाकी' में असहभाग दर्शाते हैं। अनिमेष दा उच्च वर्ग के काले कारनामों में साथ देना नहीं चाहते। वह दलित आदिवासियों का अधिकार उन्हें मिले तथा सच्चाई, ईमानदारी और निर्भीड़ता की राह पर अनिमेष दा चलना चाहते हैं।

इस कहानी में अनिमेष दा अपने वर्दी के प्रति वफादार है। जोनाकी ग्राम के आदिवासियों की व्यथा सुनकर उन्हें अपनी वर्दी से ज्यादा सत्य का साथ देना पसंद करते हैं।

2.2.4.11 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' -

'दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी में महमूद अपने दोस्तों को रेलगाड़ी में मिली दुनिया की सबसे हसीन औरत के बारे में बताता है। ओरॉव जन-जाति की एक आदिवासी महिला जिसके चेहरे पर तीन गोदने गुदवाए हैं। वह महिला मूली की गठरी लेकर रेल में चढ़ती है। खिड़की के पास जगह मिलने पर वह बच्चों जैसी खुश होती है। टी. टी. साहिबा टिकट की जाँच-पड़ताल करने पर उस औरत के पास मूलियों के दस रुपए माँगती है। बिना टिकट लिए दो शरीफजादी लड़कियाँ रेलगाड़ी में चढ़ती हैं तथा टी. टी. साहिबा को पाँच-पाँच रुपए देकर खुश करती हैं। डिब्बे में रेल्वे पुलिस के दो जवान चढ़ते हैं और बिना पूछे ही चुन-चुन कर मुट्ठी भर

मूलियाँ उठाते हैं। मूलियाँ छितराने से एक मूली शरीफजादी लड़की पर गिरती है। तब वह लड़की चिल्लाती है और उस आदिवासी औरत पर गुस्सा करती है। आदिवासी औरत बड़े प्यार से पूछताछ करने पर वह लड़की उसे जंगली एवं बाजारू कहती है। उस औरत को हीनता से देखती है। वह औरत खड़ी होकर उन लड़कियों को बैठने के लिए जगह देती है। वह आदिवासी औरत रोने लगती है, तब महमूद उसे रोने का कारण पूछता है। वह बताती है अगर उसके पास भी चार पैसे होते और पति भी साथ होता तो वह शरीफजादी कहलाती अभी तो वह जंगली एवं बाजारू है।

महमूद आदिवासी औरत पर हुए अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है। पहले वह टी. टी. साहिबा फिर पुलिस और अंत में उन शरीफजादी लड़कियों को डाँटता है। फिर उस ओरॉव जन जाति की उस औरत को उसके चेहरे पर जो तीन गोदने गुदवाए हैं उसका इतिहास बताता है। सरहूल के पर्व में सारे मर्द नशे में धुत्त बेहोश थे और तभी साम्राज्यवादियों ने आज़ाद जातियों पर हमला किया। रानी सिनगी दई सिर्फ औरतों की फौज लेकर हमलावरों को शिकस्त देती है। तीन शिकस्त का बदला चेहरे पर तीन बार दाग कर लेना और इन दागों को कलंग न मानकर उसने उसे सिंगार के रूप में अपनाया। जुल्म की खिलाफत ही बहादूरी है। महमूद भी उस औरत को तुम भी बहादूर बनकर अन्याय के खिलाफ आवाज उठाओ ऐसा कहता है। महज जीत की आशा न करें क्योंकि हार भी सिंगार है। यह इतिहास सुनकर उस ओरॉव जन-जाति औरत का चेहरा आत्मविश्वास, जिजीविषा, कृतज्ञता, स्नेह और सौहार्द से खिल उठता है। महमूद का कहना है यही दुनिया की सबसे हसीन औरत है।

इस कहानी में औरतों को अन्याय तथा जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा दी है। जीत की अपेक्षा न कर हार में भी हम अपना अस्तित्व बनाए रख सकते हैं यह भी बताया है।

2.2.5 'प्रेतमुक्ति' -

दिशा प्रकाशन, दिल्ली से सन् 1996 में प्रकाशित संजीव जी का पाँचवा कहानी संग्रह 'प्रेतमुक्ति' में चार कहानियाँ हैं। इस कहानी संग्रह की विशेषता यह है कि चारों कहानियाँ लंबी कहानियाँ हैं। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में दलित-जीवन, उनकी अंधश्रद्धा तथा जमींदारों द्वारा होनेवाले शोषण को प्रस्तुत किया है। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी में हबीब मियाँ की दलित

बस्ती तथा पुलिस शोषण को चित्रित किया है। 'मक्तल' कहानी में दफ्तर में व्याप्त भ्रष्टाचार दृष्टिगोचर हुआ है। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी में ठाकुरों एवं राजनीति द्वारा दलित शोषण दिखाई देता है। अतः इन कहानियों का वस्तुपरक विवेचन इस प्रकार से है -

2.2.5.1 'प्रेतमुक्ति' -

'आप यहाँ हैं' कहानी संग्रह में 'प्रेतमुक्ति' कहानी का वस्तुपरक विवेचन प्रस्तुत हुआ है। देखिए (2.2.2.10)

2.2.5.2 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' -

'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी में डायरेक्टर साहब अपराधियों के जीवन पर एक वृत्तचित्र बना रहे हैं। वृत्तचित्र में सीलतोड़ी का शॉट लेते हैं तथा प्रधानमंत्री के संदेश को भी चित्रित करते हैं। द्विवेदी जो पी. आर. ओ. हैं वे यह वृत्तचित्र देखकर मुँह बिचकाते हैं। वे डायरेक्टर साहब से क्लोज शॉट्स लेने के लिए कहते हैं। क्योंकि पुलिस जवान के चेहरे से टपकती देशभक्ति, कर्तव्य परायणता, नैतिकता दिखाई देनी चाहिए। साथ ही अपराधियों के चेहरे पर खुदी शैतानियत, कमीनापन और मक्कारी नजर आनी चाहिए। फिल्म में कुछ अंतरंग शॉट्स के लिए डायरेक्टर साहब को हबीब मियाँ की बस्ती जाना पड़ता है।

हबीब मियाँ की बस्ती पर हवालदार कुंदनसिंह का राज चलता है। कुंदनसिंह के जरिए ही डायरेक्टर साहब हबीब मियाँ के बस्ती में पहुँचते हैं। हबीब मियाँ का बेटा कुतुबन चोरी करते वक्त पकड़ा जाता है, तब सारे लोग कुतुबन का मुंड़न करवाकर उसे गधे पर बिठाकर सारा शहर घूमाते हैं। कुतुबन के गले में एक दफ्ती है जिस पर 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' यह लिखा हुआ है। बस्ती के लोग कुतुबन का यह रूप देखकर नाचने लगते हैं। हवालदार कुंदनसिंह बस्ती के लोगों को चोरी करने के लिए उकसाता रहता है 'ना' कहने पर लोगों को मारना-पीटना तथा उन पर झूठे इल्जाम लगाकर थाने में कैद करता है। बस्ती की औरतों को भी अपनी वासना का शिकार बनाता है। चौदह-पंद्रह साल की रधिया के साथ अनैतिक संबंध रखता है। हबीब मियाँ को सीलतोड़ी करने में भी वह सहायता करता है। इस प्रकार हवालदार कुंदनसिंह अपनी वर्दी का गलत इस्तेमाल करके अपराध कम करने की बजाय बढ़ाता रहता है।

हबीब मियाँ पंद्रह अगस्त को बस्ती में स्वतंत्रता दिन मनाने की सोचते हैं। झंडा उड़ाने के लिए हवालदार कुंदनसिंह को चुना जाता है। झंडोत्तोलन के बाद सेठ राघोमलजी बुंदिया बाँटते हैं। तब हबीब मियाँ को सीलतोड़ी करते वक्त जो डालड़ा तथा चीनी प्राप्त हुई है उससे वे बुंदिया बनाकर बस्ती में बाँटने की बात करते हैं। हवालदार कुंदनसिंह झंडा लगाने के लिए स्टील ट्यूब यार्ड में पड़ा है उसे लाने के लिए कहते हैं। फूलवारी से फूल भी चुराकर लाने की सलाह देते हैं। डायरेक्टर साहब बस्ती के यह सारे शॉट्स लेते हैं। सेठ राघोमलजी जो सीलतोड़ी का माल अपने गोदाम में रखवाते हैं उन्हीं पर प्रधानमंत्री का संदेश चित्रित करते हैं जो इस प्रकार है- ''रेलवे राष्ट्र की संपत्ति है। हम एक-एक पैसे के लिए राष्ट्र की जनता के प्रति जवाबदेह है।''[1] तथा हवालदार कुंदनसिंह सैल्यूट मारते चित्रित होते हैं। कुतबुन डायरेक्टर साहब से फिल्म का नाम पूछता है। कुंदनसिंह के पास खड़ा कुतुबन पर फिल्म के मुहूर्त का शॉट होता है- 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको'।

इस कहानी में डायरेक्टर साहब अपराधियों के जीवन पर वृत्तचित्र बनाते हैं और हबीब मियाँ की बस्ती में उन्हें सारी वास्तविकता प्राप्त होती है।

2.2.5.3 'मक्तल' -

'मक्तल' कहानी के कथानायक जितेंद्र प्रसाद दफ्तर के पहले दिन अपने सहकर्मियों की जान-पहचान करा लेते हैं। यह सारे सहकर्मी बॉस की चमचागिरी करते हैं। हर कोई मालिक के प्रति वफादारी दिखाता है तथा एक-दूसरे की शिकायतें करता रहता है। दफ्तर में मक्तल की तरह फैले इन सहकर्मियों को जितेंद्र प्रसाद तथा युनियन लीडर अमरीक सिंह मैनेजर की चमचागीरी न करने की सलाह देते हैं। दफ्तर में ज्युनियर मैनेजिंग की पोस्ट निकालते हैं। दफ्तर के सहकर्मी संतु दा को आवेदन देने के लिए कहते हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर शैक्षिक योग्यतावाले व्यक्ति का विचार करने की बात पर अन्य सहकर्मी भी अपना आवेदन पत्र देते हैं। जितेंद्र प्रसाद में शैक्षिक योग्यता है इसीलिए यह पोस्ट उसे ही प्राप्त होगी यह मानकर सारे सहकर्मी मैनेजर के कान फूँकते हैं। मैनेजमेंट को दफ्तर में से एक आदमी छाँटना है इसीलिए वह दफ्तर के सहकर्मियों में गलत

---

1. संजीव - प्रेतमुक्ति, पृष्ठ - 43

फहमी पैदा करता है। जितेंद्र प्रसाद यह बात सबको समझाता है, परंतु कोई भी उसकी बात नहीं मानता। अतः जितेंद्र प्रसाद अपना इस्तीफा देकर दफ्तर के मक्तल से बाहर आता है। लेकिन बाहर आने पर जितेंद्र प्रसाद को महसूस होता है कि भ्रष्टचार का मक्तल सिर्फ उस दफ्तर तक सीमित नहीं है बल्कि आगे-पीछे, दाये-बाये, ऊपर-नीचे हर जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है।

इस कहानी में आदमी को एक-दूसरे को नीचे खींचने की वृत्ति स्पष्ट हुई है। अपने स्वार्थ के लिए अन्य लोगों की बुराई करने की वृत्ति तथा मैनेजमेंट का दोगलापन यहाँ पर प्रस्तुत हुआ है।

2.2.5.4 'तिरबेनी का तड़बन्ना' -

परशुरामपुर में ठाकुरों की हुकूमत चलती है। कथानायक तिरबेनी उसी गाँव का रहनेवाला है। वह तड़बन्ने से ताड़ी उतारकर उसे बेचने का व्यवसाय करता है। तिरबेनी गाँव के उच्च वर्ण से नहीं डरता तथा वह अपनी पत्नी तथा गाँववालों को भी बहादूर बनने के लिए कहता है। प्रधान चन्नर सिंह अपने भाई गुलजार सिंह को जायदाद का हिस्सा नहीं देता है, तब वह गाँव में दलितों की पार्टी बनाता है। पार्टी का सेक्रेटरी तिरबेनी बनता है। गुलजार सिंह किताबी बातें पढ़-पढ़कर दलितों को उच्च वर्ण के खिलाफ भड़काता रहता है। गुलजार सिंह पार्टी के लड़कों का आत्मबल देखकर तथा अपने भाई चन्नर सिंह के प्रति अपशब्द सुनकर वह मन-ही-मन कसमसाता रहता है कि उसने लड़कों में जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास दिया है। चंद्रभान सिंह गुलजार सिंह को दलितों की पार्टी छोड़ने के लिए कहता है। इसके बदले में वह चन्नर सिंह से कहकर उसकी जायदाद दे देंगे। पार्टी में पंडित का बेटा बंशीधर तथा दुद्धिसिंह शामिल होनेवाले हैं, यह जानकर पार्टी में अधिक उत्साह आता है।

तिरबेनी चन्नरसिंह से बिना पूछे ताड़ के झाड़ पर चढ़ता है तब दोनों में झगड़ा होता है। पार्टी की मीटिंग में तड़बन्ना ग्राम समाज का है और तिरबेनी गाँव का इसीलिए उसे ताड़ पर चढ़ने का अधिकार मिलता है। तिरबेनी सवेरे-सवेरे बिना मकरा लिए ताड़ पर चढ़ता है और ताड़ पर उलट जाता है। सारा गाँव तिरबेनी को बचाने की बजाय उसे देखकर तरह-तरह की बातें करते हैं। तिरबेनी को बचाने के लिए बाँस की जरूरत है और गुलजार तथा चन्नरसिंह की पत्नियाँ अपने

खेत से बाँस तोड़ने नहीं देती। तिरबेनी की पत्नी आकर सबको गालियाँ देती है और खेत में जाकर बाँस काटती है। पार्टी के लोग भी सहायता के लिए दौड़ते हैं और तिरबेनी को बचा लेते हैं।

इस कहानी में उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग का संघर्ष चित्रित हुआ है। साथ ही झूठी राजनीति द्वारा दलितों ऊकसाया जाता है। इस वृत्ति का अंकन हुआ है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि संजीवजी की कहानियाँ आत्मअनुभव की अनुभूति है। इनकी कहानियों में हिंसात्मक तथा अहिंसात्मक विद्रोह दिखाई देता है। अपने साहित्य के माध्यम से दलित जीवन की यथार्थता उन्होंने प्रस्तुत की है। इनकी कहानियाँ पाठकों को सोच-विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। अन्याय, अत्याचार, शोषण, छुआ-छूत, जातीय भेदाभेद, अशिक्षा तथा अंधविश्वास इनकी कहानियों में चित्रित हुआ है। साथ ही संजीव जी ने अपने अनुभव तथा आपबीती को कहानियों में व्यक्त किया है।

कहानी का प्राणतत्त्व कथावस्तु है। आज की कहानियों में विविध आयामों में कथावस्तु दिखाई देती है। जीवन की विविध समस्याओं को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। समाज के हर स्तर को कहानी में स्थान प्राप्त हो रहा है। इसमें साहित्य से दूर उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, दलित समाज का चित्रण हो रहा है। दलित जीवन को केंद्र मानकर साहित्य निर्मिति हो रही है यह समाज की और साहित्य की प्रगति है। दलित जीवन की यथार्थता समाज के सामने रखकर दलितों को न्याय दिया जा रहा है।

संजीव जी की कहानियों में नारी सक्षम दिखाई देती है। साथ ही अपने अधिकारों के प्रति सजग तथा अन्याय के खिलाफ लड़नेवाली नारी इनकी कहानियों में चित्रित हुई है। 'घर चलो दुलारी बाई' कहानी की दुलारी अपने अधिकार के लिए अदालत जाती है। 'जसी बहू' कहानी की जसी बहू अपना पति अन्याय के खिलाफ नहीं लड़ता तथा उसकी इज्जत लूटनेवाले के तलवे चाटता है। इसीलिए उसे छोड़कर विधवा बनती है। 'आप यहाँ हैं' की हिंदिया, 'तिरबेनी का तड़बन्ना' की तिरबेनी बहू अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है। अनपढ़ देहाती औरतें होकर भी वे अपने अधिकारों के प्रति सजग नारियाँ चित्रित हुई हैं।

'भूखे रीछ', 'धनुष टंकार', 'चुनौती', 'नेता' तथा 'फुटबॉल' कहानियों में मजदूरों की व्यथा प्रस्तुत हुई है। मिल मालिक द्वारा शोषण और उसके खिलाफ मजदूरों का हिंसात्मक एवं अहिंसात्मक विद्रोह स्पष्ट हुआ है। 'टीस' कहानी में शिबू काका का दर्द अंकित किया है। 'मरोड़' कहानी में मास्टरजी का जीवन उद्धृत किया है। 'जब नशा फटता है' में मेहतर लोगों द्वारा धर्म परिवर्तन की समस्या को पेश किया है। 'पुन्नी माटी' में अनब्याही शिखा की दास्ता प्रस्तुत की है। 'आप यहाँ हैं' तथा 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी में आदिवासी नारी का शोषण प्रस्तुत हुआ है। 'प्याज के छिलके' में हरिजन शोषण तथा गंदी राजनीती के दर्शन होते हैं। 'फुटबॉल' तथा 'मक्तल' कहानी में भ्रष्टाचार तथा बेरोजगार युवकों की समस्याओं को ऊठाया है। 'पिशाच' कहानी में सामंतवादी महातम बाबा का जीवन प्रस्तुत हुआ है। 'महामारी' कहानी में अंधविश्वास को रेखांकित किया है। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' में हबीब मियाँ की बस्ती का चित्रण प्राप्त होता है। 'अपराध' में समाज में स्थित अपराधों को उजागर किया है। 'तीस साल का सफरनामा' में उच्चवर्णीय लोगों का वर्चस्व उजागर किया है। 'वापसी' में फौजी लोगों की विकृति स्पष्ट हुई है।

संजीव की कहानियों में राजनीतिक मंत्री, पुलिस, सरकारी अफसर आदि के कारन में प्रस्तुत हुए हैं। उन्होने समाज के इन उच्च शिक्षितों की धोती खोलने का प्रयास किया है। 'वापसी' के फौजी एवं मेजर, 'अपराध' के जेलर इसका ज्वलंत उदाहरण है। 'नेता', 'चुतिया बना रहे हो', 'प्याज के छिलके' आदि कहानियों में स्वार्थी, भ्रष्ट राजनीति के दर्शन हुए हैं। 'टीस' कहानी के लिए संजीव जी सपेरों के गाँव जाकर तथा उनका जीवन एवं व्यथा को जानकर उसे अंकित किया है। 'अपराध' कहानी के लिए वह जेल जाकर परिस्थिति को देखकर उसकी रचना प्रस्तुत की है। अस्तित्व की टकराहट से जुड़ी 'प्रतिद्वंद्वी' कहानी है। 'लोडशेडिंग' और 'ट्रैफिक जाम' कहानियाँ विचारप्रधान कहानियाँ हैं। 'आप यहाँ हैं' की रचना प्रक्रिया में संजीव जी लिखते हैं- 'सामाजिक उत्पीड़न, मानवीय जलालत, गैर-बराबरी, दमन आदि कुछ ऐसे सवाल हैं, जो मुझे बराबर परेशान किए रहते हैं, ये शक्लें बदल-बदलकर आते हैं और उनके जुझती जिजीविषा शक्लें बदल कर मेरी रचनाओं में।' इससे स्पष्ट है कि संजीव जी की कहानियाँ उनके अनुभव की उपज

है। दलितों के लिए कुछ करने की उमंग, उनमें चेतना प्रदान करने की ताक़त इनकी कहानियों में देखी जा सकती है। दलित-जीवन की यथार्थता को उन्होंने हू-ब-हू रेखांकित किया है। उनकी जिज्ञासू वृत्ति के कारण चारों तरफ फैले भ्रष्टाचार, अत्याचार, अन्याय, शोषण आदि घटनाओं, क्रियाओं को संजीव जी की कहानियों में देखा जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि कहानीकार संजीव एक सफल साहित्यकार हैं। उनका लेखन उद्देश्यपरक है, जन-जीवन के बीच उतरकर उन्होंने अपनी कहानियों को एक नया रूप दिया है। उनकी कहानियाँ दलितों के हृदय में एक नई चेतना प्रदान करेंगी। कहना सही होगा कि समाज का नवनिर्माण करने की ताक़त संजीव की कहानियों में उद्वेलित हुई है।